सेवा समर्पण

मूल्य ₹ 20

वर्ष-41, अंक-11, कुल पृष्ठ-36, श्रावण-भाद्रपद, विक्रम सम्वत् 2081, अगस्त, 2024

वायनाड में सेवा भारती के सेवा कार्य

पाठकों से निवेदन

प्रिय पाठको!

इन दिनों यह अनुभव हम और आप प्रतिदिन कर रहे हैं। हर वस्तु का मूल्य बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। चाहे रोजमर्रा का सामान हो या लिखने-पढ़ने की सामग्री-हर चीज की कीमत कई गुनी बढ़ चुकी है। कागज महंगा हो गया है, छपाई महंगी हो गई है। पिछले दो-तीन माह से पत्रिका रंगीन छप रही है। स्वाभविक रूप से इन सबका असर आपकी लोकप्रिय पत्रिका 'सेवा समर्पण' पर भी पड़ रहा है। किन्तु पाठकों ध्यान में रखते हुए 'सेवा समर्पण' के मूल्य में पिछले कापी समय से कोई वृद्धि नहीं की गई। सुचारू रूप से चलाने के लिए पर अब लग रहा है कि यह आवश्यक है। इसलिए अब एक अंक का मूल्य 20 रु., वार्षिक 200 रु. एवं आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रु. किया जा रहा है। यह वृद्धि अप्रैल, 2024 के अंक से लागू होगी।

आशा है सुधी पाठक पूर्व की तरह आगे भी अपना अमूल्य सहयोग देते रहेंगे।

– सम्पादक

अभ्यास वर्ग संपन्न

सरस्वती विहार जिला मासिक अभ्यास वर्ग 20 जुलाई को आनंदवास नगर के ब्लॉक सेवा भारती केंद्र में संपन्न हुआ। इसमें प्रांत मंत्री बहन संगीता त्यागी जी का मार्गदर्शन रहा। विभाग से सहमंत्री श्रीमान मनोज शर्मा जी, जिले के माननीय अध्यक्ष श्रीमान प्रमोद अग्रवाल जी, अध्यक्षा श्रीमती आशा कथूरिया जी, माननीय उपाध्यक्ष श्रीमान विनोद जैन जी, मंत्री अनुज जी, सहमंत्री अग्रवाल जी, श्रीमान तिवारी जी, महिला समिति मंत्री बहन संगीता जी, सहमंत्री सुनीता जी एवं जिले की निरीक्षिका बहन सुनीता जी उपस्थित रहीं। तत्पश्चात् जिले की सभी शिक्षिकाओं द्वारा गुरु पूजन भी किया गया। इसमें राष्ट्र सेविका समिति दिल्ली प्रांत टोली सदस्य, जिला शारीरिक प्रमुख दामिनी जी मुख्य शिक्षिका रहीं। वक्ता जिले की महिला समिति अध्यक्षा आशा जी रहीं। गुरु पूजन में कुल संख्या 44 रही। ❐

चिकित्सा केंद्र का शुभारंभ

गत 21 जुलाई को सेवा भारती दक्षिणी विभाग लाजपत जिला द्वारा मीरपुर बलिदान भवन केंद्र पर विधिवत तरीके से चिकित्सा केंद्र का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। आज कैंप में मरीजों का चेकअप, कंसल्टेशन के साथ में दवाइयां भी दी गईं। कैंप में राममनोहर लोहिया अस्पताल के डॉ. गौतम जी, डॉ. राहुल खरे जी, डॉ. चिराग जी, सफदरजंग अस्पताल से डॉ. मालेराम राम जी, डॉ. मोहन जी व मेडिकल के छात्रों ने सेवा प्रदान की। मरीजों की संख्या 52 रही। कार्यक्रम में श्री अनंगपाल जी, श्री प्रमोद जी, श्री चुन्नीलाल जी, श्री काशीनाथ जी, राजेंद्र ढींगरा जी, सुभाष जी, विजय जी सुनील जी, सुब्रह्मण्य जी, डॉ. शालिनी गुप्ता जी, पूनम सैनी जी, माया शर्मा जी, डॉ. ललिता जी व स्मृति जी उपस्थित रहे।

संरक्षक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

परामर्शदाता
डॉ.. राम कुमार

सम्पादक
डॉ.. शिवाली अग्रवाल

कार्यालय
सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर कुमार

एक प्रति : 20/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 200/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-41, अंक-11, कुल पृष्ठ-36, अगस्त, 2024

विषय - सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
संपादकीय		4
वायनाड में सेवा भारती के सेवा कार्य	प्रतिनिधि	6
वायनाड की आपदा और संघ की तत्वनिष्ठा	दुर्गेश कुमार	8
जहाँ शिव, वहाँ आनन्द	इन्दिरा मोहन	10
युवाशक्ति और सेवा	विजय सिंह माली	11
सनातन संस्कृति में सेवा और लोक-कल्याण का भाव	रिचा शर्मा	12
येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबल:	अमर नाथ झा	14
चातुर्मास का महत्व	विनीता अग्निहोत्री	16
भाई का साथ		17
कविता : राखी		17
व्यवस्था और अनुशासन के पर्याय	प्रतिनिधि	18
तमस दूर करती मातृछाया		19
धैर्यवान अधीश जी		21
सन्तों की पाती, सेवाभावी महानुभावों के नाम		22
इस वक्त		23
कविता : राष्ट्र चेतना का आवाहन	इन्दिरा मोहन	23
कहानी : माँ, अभी तो मैं इंग्लैंड में ही हूँ	डॉ. सुभाष गोयल	24
माता-पिता के साथ समय बिताओ	संजय रॉबिन	25
घुमंतू बाल बालिका विकास शिविर	प्रतिनिधि	27
सेवा भारती की गतिविधियाँ		29

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

संघ और सरकारी सेवक

गत 9 जुलाई को केंद्र सरकार ने 1966 में लगे उस प्रतिबंध को हटा लिया है, जिसमें कहा गया था कि सरकारी नौकरी करने वाले लोग राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की गतिविधियों में भाग नहीं ले सकते हैं। यह निर्णय उन लोगों के लिए बहुत ही भावुक करने वाला है, जो संघ की गतिविधियों में चाहते हुए भी भाग नहीं ले सकते थे। हम सबको पता है कि समाज में ऐसे बहुत से लोग हैं, जो सरकारी नौकरी में रहते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यों में हाथ बंटाना चाहते थे। लेकिन अब ऐसे लोग संघ के कार्यक्रमों में अच्छी तरह भाग ले सकते हैं। इसलिए केंद्र सरकार और विशेषकर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का अभिनंदन।

इसी कड़ी में मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति सुश्रुत धर्माधिकारी तथा न्यायाधीश न्यायमूर्ति गजेन्द्र सिंह का भी अभिनंदन होना चाहिए। इन दोनों न्यायमूर्तियों ने सरकारी कर्मचारियों पर संघ को लेकर जो प्रतिबंध था, उससे जुड़ी एक याचिका का निपटारा करते हुए, जो कहा है, उसे हर उस भारतीय को पढ़ना चाहिए, जो देशहित की बात करता हो। बता दें कि इंदौर निवासी पुरुषोत्तम गुप्ता ने इंदौर स्थित मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय की खंडपीठ के समक्ष एक याचिका दायर की थी। इसमें उन्होंने कहा था कि सरकारी सेवा में रहने के कारण वे संघ की गतिविधियों में भाग नहीं ले सकते थे। सेवानिवृत्ति के बाद भी वे ऐसा नहीं कर पा रहे थे, क्योंकि 1966 का प्रतिबंध सेवानिवृत्त कर्मचारियों और अधिकारियों पर भी लागू होता था। उनकी इस याचिका की सुनवाई करने के दौरान ही केंद्र सरकार ने 1966 के प्रतिबंध को हटा लिया।

इसके बाद इन दोनों न्यायाधीशों ने कहा कि हालांकि केंद्र सरकार द्वारा याचिकाकर्ता द्वारा की गई माँग स्वीकार कर ली गई है तथा केंद्र सरकार ने 1966 के उस उस आदेश को वापस ले लिया है, जिसमें सरकारी कर्मचारियों के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की गतिविधियों में भाग लेने की मनाही थी। इस दशा में प्रस्तुत याचिका का निस्तारण एक औपचारिकता भर शेष रह गया है। परन्तु यह कि मामले की गंभीरता तथा विशेषत: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसी गैर-सरकारी संस्थाओं पर पड़ने वाले इसके व्यापक प्रभाव को देखते हुए न्यायालय को यह उचित लगता है कि इस विषय पर अपनी टिप्पणियाँ दी जाए।

ये टिप्पणियाँ इसलिए भी आवश्यक हो जाती हैं जिससे कि आने वाले समय में कोई सरकार अपनी सनक और मौज के चलते राष्ट्रीय हितों में कार्यरत किसी स्वयंसेवी संस्था को सूली पर न चढ़ा दे जैसा कि गत 5 दशक से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ होता आया है।

केंद्र सरकार द्वारा 1966, 1970 और 1980 के आदेशों के माध्यम से केंद्र सरकार के कर्मचारियों पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में प्रवेश को यह बताते हुए प्रतिबंधित कर दिया था कि संघ एक पंथनिरपेक्षता विरोधी और सांप्रदायिक

संगठन है। प्रश्न यह उठता है कि संघ को किस सर्वेक्षण या अध्ययन के आधार पर सांप्रदायिक और पंथनिरपेक्षता विरोधी घोषित किया गया था?

किस आधार पर सरकार इस नतीजे पर पहुँची थी कि सरकार के किसी कर्मचारी के, सेवानिवृत्ति के पश्चात भी, संघ परिवार की किसी गतिविधि में भाग लेने से समाज में सांप्रदायिकता का संदेश जाएगा?

ऐसी दशा में न्यायालय यह मानने के लिए बाध्य है कि ऐसा कोई सर्वेक्षण, अध्ययन, सामग्री या विवरण है ही नहीं जिसके आधार पर केंद्र सरकार यह दावा कर सके कि उसके कर्मचारियों के संघ, जो कि एक अराजनीतिक संगठन है, की गतिविधियों से जुड़ने पर प्रतिबंध आवश्यक है जिससे कि देश का पंथनिरपेक्ष ताना-बाना और सांप्रदायिक सौहार्द अक्षुण्ण बना रहे।

दोनों विद्वान न्यायाधीशों ने कहा कि इस मामले की सुनवाई के दौरान अलग-अलग तारीखों पर हमने पाँच बार यह पूछा कि किस आधार पर केंद्र के लाखों कर्मचारियों को 5 दशक तक अपनी स्वतंत्रता से वंचित रखा गया था? यदि याचिकाकर्ता द्वारा यह याचिका प्रस्तुत नहीं की जाती, तो यह प्रतिबंध आगे भी जारी रहता, जो कि संविधान के अनुच्छेद 19(1) का खुला अपमान होता।

न्यायाधीशों ने कहा कि उपरोक्त आधारों पर न्यायालय के सामने तीन प्रश्न खड़े होते हैं-

(1) क्या केंद्र सरकार के कर्मचारियों पर संघ में प्रवेश पर प्रतिबंध किसी ठोस आधार पर लगाया गया था या सिर्फ एक संगठन, जो कि तत्कालीन सरकार की विचारधारा से सहमत नहीं था, को कुचलने के लगाया गया था?

मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय ने कहा- सरकार द्वारा संघ को पंथनिरपेक्षता विरोधी, सांप्रदायिक और राष्ट्र हित विरोधी बताते हुए लगाया गया प्रतिबंध न सिर्फ संघ के लिए हानिकारक है, परन्तु प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए भी हानिकारक है, जो संघ से जुड़ कर राष्ट्र और समाज की सेवा करना चाहता है।

(2) क्या संघ को इस प्रतिबंधित संगठनों की सूची में बनाए रखने के लिए समय-समय पर कोई समीक्षा की गई थी? यह एक प्रतिष्ठित कानूनी परम्परा है कि कोई भी प्रतिबंध अनन्त काल तक जारी नहीं रह सकता और यह कि समय-समय पर ऐसे प्रतिबंध की, बदलते समय और संविधान की व्याख्याओं के तहत सतत विस्तृत हो रही स्वतंत्रता के आधार पर समीक्षा होनी चाहिए।

(3) यदि उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर सहमति में हैं तो यह प्रश्न भी खड़ा होता है कि केंद्र सरकार द्वारा अचानक किस आधार पर संघ को प्रतिबंध की सूची से हटा लिया गया?

यदि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का नाम प्रतिबंधित सूची से सोच समझ कर हटाया जा रहा है तो न्यायालय यह अपेक्षा रखता है कि यदि भविष्य में कभी पुनः संघ एवं उसके अनुषांगिक संगठनों को प्रतिबंधित सूची में जोड़ने का प्रस्ताव लाया गया तो उसके पीछे गहन अध्ययन, ठोस सामग्री, मजबूत आँकड़े, उच्चतम अधिकारियों के स्तर पर गंभीर चिंतन तथा बाध्यकारी सबूतों का आधार होना चाहिए।

अन्यथा ऐसा प्रतिबंध भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14 एवं 19 का अपमान ही कहलाएगा तथा ऐसा प्रतिबंध निश्चित ही संवैधानिक चुनौती के लिए खुला रहेगा।

सरकार द्वारा संघ को पंथनिरपेक्षता विरोधी, सांप्रदायिक और राष्ट्र हित विरोधी बताते हुए लगाया गया प्रतिबंध न सिर्फ संघ के लिए हानिकारक है, परन्तु प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए भी हानिकारक है, जो संघ से जुड़ कर राष्ट्र और समाज की सेवा करना चाहता है।

मौलिक स्वतंत्रता पर रोक लगाने वाला आदेश सदैव ही ठोस सबूतों और न्यायोचित आँकड़ों पर आधारित होना चाहिए। न्यायालय इसे भी दुखद मानता है कि केंद्र सरकार को इस त्रुटि को दुरुस्त करने में 5 दशक लग गए तथा यह कि संघ जैसा विश्व प्रसिद्ध संगठन बिना कारण प्रतिबंधित सूची में दर्ज रहा और उसे उस सूची से बाहर निकालना अवश्यंभावी था।

मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय की उपरोक्त टिप्पणियों का एक ही निष्कर्ष है कि कांग्रेस की सरकारों ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को लेकर जो भी प्रतिबंध लगाए थे या निर्णय लिए थे, वे राजनीति से प्रेरित थे। इसलिए केंद्र सरकार ने उस प्रतिबंध को हटाकर पूर्व की सरकार द्वारा की गई गलती को सुधारा गया है। ❐

वायनाड में सेवा भारती के सेवा कार्य

■ प्रतिनिधि

घटनास्थल का निरीक्षण करते संघ और सेवा भारती के अधिकारी

केरल के वायनाड में 29 जुलाई को तेज वर्षा के बाद जमीन खिसकने से जान-माल का भारी नुकसान हुआ। यह प्राकृतिक आपदा रात दो बजे के आसपास आई और कई किलोमीटर के क्षेत्र में हाहाकार मच गया। हजारों मकान बह गए। सैकड़ों लोग लापता हैं। इस रपट के लिखे जाने तक 300 लोग मारे जा चुके हैं। इस आपदा की जानकारी मिलते ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, उत्तर केरल प्रांत के संघचालक श्री केण्केण बलराम ने स्वयंसेवकों और सेवा भारती के कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि वे पीड़ितों की मदद के लिए जुट जाएं। इस आह्वान के बाद 651 स्वयंसेवक राहत कार्य में लगे। इस कार्य में नीलगिरि जिले (तमिलनाडु) के कार्यकर्ताओं ने भी सहयोग किया। कार्यकर्ताओं ने सबसे पहले जहां-तहां फंसे लोगों को बाहर निकाला। भूस्खलन से सारे मार्ग अवरुद्ध हो गए थे। कार्यकर्ताओं ने फावड़े और अन्य उपकरणों के जरिए रास्तों को साफ किया। इससे घायलों को अस्पताल तक पहुंचाने में और आम लोगों की आवाजाही में मदद मिली। कार्यकर्ताओं ने पीड़ितों के लिए खाने की भी व्यवस्था की। इसके लिए एक अलग से रसोई घर चालू किया गया। यहां खाना तैयार कर प्रभावित लोगों तक पहुंचाया गया। इसके साथ ही कार्यकर्ताओं ने पीड़ितों के लिए कपड़े आदि की व्यवस्था की। पानी हटने के बाद कार्यकर्ताओं ने प्रभावित क्षेत्रों में कीटाणुनाशक पाउडर का छिड़काव किया, ताकि लोग किसी बीमारी की चपेट में न आ जाएं।

यही नहीं, सेवा भारती के कार्यकर्ताओं ने 40 से अधिक मृत लोगों का अंतिम संस्कार भी किया। बता दें कि केरल सेवा भारती के पास अनेक ऐसे वाहन हैं, जिनमें अंतिम संस्कार की सुविधा है। एक वाहन में तीन एल.पी.जी. सिलेंडर लगे रहते हैं। इसी गैस से नारियल के रेशों को जलाकर करीब डेढ़ घंटे में एक शव का अंतिम संस्कार हो जाता है।

इन कार्यकर्ताओं और स्वयंसेवकों ने एन.डी.आर.एफ. और सेना के जवानों के साथ जो कार्य किया उसकी चारों ओर प्रशंसा हुई। पीड़ितों की पीड़ा को कम करने के लिए केंद्र सरकार ने भी त्वरित कदम उठाए। कुछ ही घंटों के अंदर एन.डी.आर.एफ. और सेना के जवानों को लगाया गया। केंद्रीय मंत्री जॉर्ज कुरियन भी वायनाड पहुंचे और पीड़ितों से मिले। उन्होंने राहत कार्य में लगे लोगों का मनोबल बढ़ाया और पीड़ितों को हर तरह की मदद देने का भरोसा जताया। केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने भी स्वयंसेवकों के सेवाकार्य की प्रशंसा की।

पीड़ितों के लिए भोजन तैयार करते कार्यकर्ता

राज्य सरकार की निष्क्रियता को लेकर आम लोगों में गुस्सा दिखा। लोगों के गुस्से से बचने के लिए केरल के मुख्यमंत्री पिनरई विजयन ने केंद्र सरकार पर आरोप लगाया कि वह इस आपदा के समय मदद नहीं कर रही है। इसके बाद 31 जुलाई को केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने संसद को बताया कि केंद्र सरकार ने 23 जुलाई को ही केरल सरकार को आपदा की आशंका की जानकारी दे दी थी। बताया गया था कि वायनाड में 20 सेंटीमीटर से भी अधिक वर्षा हो सकती है। भूस्खलन भी हो सकता है। इसके बाद 24 जुलाई को भी यह जानकारी दी गई थी। कुल मिलाकर यह जानकारी तीन बार दी गई। लेकिन समय रहते केरल सरकार ने कोई कार्य नहीं किया। लोगों को सुरक्षित स्थानों पर नहीं पहुंचाया गया। इस कारण स्थिति ज्यादा गंभीर हुई। उन्होंने कहा कि पूर्व की चेतावनियों पर राज्य सरकार ध्यान देती तो आज अनेक लोगों की जान बच जाती। उन्होंने यह भी कहा कि पूर्व में ओडिशा और गुजरात को आपदा की जानकारी दी गई थी। उस जानकारी के आधार पर उन दोनों राज्यों की सरकारों ने काम किया और कोई जान नहीं गई। ऐसा केरल सरकार भी कर सकती थी, लेकिन उसने किया नहीं। इसके साथ ही उन्होंने राज्य सरकार को हर संभव मदद देने का आश्वासन दिया।

प्रजिश और सारथ। ये दोनों वायनाड में सेवा कार्य करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। संघ के इन दोनों कार्यकर्ताओं को अंतिम प्रणाम।

केरल के अलावा इन दिनों कई राज्यों में भी भारी वर्षा हो रही है। इस कारण जान माल को नुकसान हुआ है। सेवा भारती और संघ के स्वयंसेवक इन राज्यों में भी प्रभावितों की सेवा कर रहे हैं। इस रिपोर्ट के लिखे जाने तक अनेक प्रकार के सेवा कार्य किए जा रहे हैं। ❐

वायनाड की आपदा और संघ की तत्वनिष्ठा

■ दुर्गेश कुमार

केरल के वायनाड में हाल ही में आई प्राकृतिक आपदा – भूस्खलन के चलते लगभग 308 लोग काल के ग्रास में समा गये, सैकड़ों लोग घायल हुए हैं एवं 200 से अधिक लोग अभी भी लापता हैं। ऐसी आपदा की घड़ी में एक बार पुनः राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने सेवा का मोर्चा संभाला एवं हरसंभव सहायता के लिए तत्पर रहते हुए जुट गये। कई लोगों के मन में यह प्रश्न बार-बार उलाहनेस्वरूप आता है कि जब केरल राज्य में संघ के स्वयंसेवकों, हिन्दुत्व समर्थकों एवं भाजपा के कार्यकर्ताओं की हत्याओं का एक लम्बा और निर्मम इतिहास रहा है, तो वहाँ पर संघ के स्वयंसेवक आखिर सेवाकार्य क्यों कर रहे हैं? आम आदमी का यह प्रश्न निराधार तो नहीं कहा जा सकता है, परंतु जिसमें संघ की तत्वनिष्ठा का जरा-सा भी बोध है, उसके सामने ऐसे प्रश्न पानी के बुलबुलों की तरह हैं, जो उठते के साथ ही जल में पुनः लीन हो जाते हैं।

संघकार्य का आधार व्यक्तिनिष्ठा नहीं, अपितु राष्ट्र एवं तत्वनिष्ठा है। केरल राज्य भी भारतवर्ष का ही हिस्सा है एवं वहाँ पर हिन्दू समाज सदियों से निवास करता आ रहा है। भले ही राजनीतिक रूप से वहाँ पर अलग-अलग राजनीतिक दलों का शासन रहा हो, मगर संघ के सेवाकार्य किसी सरकार, धर्म-पंथ-संप्रदाय को देखकर एवं किसी लोकेषणा की भावना के वशीभूत होकर नहीं किये जाते, अपितु वह केवल इसलिए किये जाते हैं, क्योंकि किसी समय-विशेष पर किये जाने अपरिहार्य हैं। संघ तो 1925 से सामाजिक कार्य करते आ रहा है और तब भी करता था, जब पूरे भारत में कांग्रेस एवं गैर भाजपाई सरकारों की सत्ता हुआ करती थी, फिर आज यह प्रश्न उभरना निरर्थक ही है। समाज पर आये संकट को देखकर संघ मौन नहीं रह सकता, उसे अपने कर्तव्यों का बोध सदैव से रहा है।

संघ की यह स्पष्ट मान्यता है कि संघ समाज में संगठन का करेगा एवं समाज के लिए नैतिक एवं राष्ट्रीय चारित्र्य-युक्त अत्युत्तम व्यक्तियों का निर्माण करेगा। यह भी स्पष्ट है कि संघ स्वयं कुछ नहीं करता और स्वयंसेवक समाज के कार्यों में कुछ भी नहीं छोड़ता। संघ विश्व का एकमात्र ऐसा स्वयंसेवी एवं सामाजिक संगठन है, जिसमें समाज का हर वह व्यक्ति जा सकता है, जिसके मन में समाज के प्रति कर्तृत्व का भाव है, समाज को जागरूक एवं सकारात्मक बनाने के लिए कुछ कर गुजरने की भावना है। संघ की रचना ही ऐसी है कि यह संगठन के रूप में एक आश्चर्यमिश्रित पहेली

कीचड़ से सने मार्ग की सफाई करते सेवा भारती के कार्यकर्ता

है। विश्व के अनेक देशों में संघ के प्रति सदैव ही अत्यंत कौतूहल रहा है, इसलिए विदेशियों में इसे समझने एवं शोध करने की हमेशा लालसा रही है। विश्व में आज यह सबसे बड़ा और प्रतिष्ठित सामाजिक संगठन है।

संघ में आने वाले स्वयंसेवकों को कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाता, बल्कि समाज में चलने वाले प्रकल्प एवं सारे जनहित के कार्य स्वयंसेवकों व समाज की सक्रिय भागीदारी एवं सहकारिता की भावना से चलते हैं। एक बार पण्पूण संघचालक श्री मोहन भागवत जी ने भी बताया था कि एक बार उनसे किसी ने पूछा कि संघ में आने पर उसे क्या मिलेगा, तो उन्होंने कहा था कि यदि आप कुछ लाभ पाने की भावना से आते हो, तो इससे अच्छा है कि मत आओ, क्योंकि संघ में मिलता कुछ नहीं है, बल्कि जो आपके पास में है, वह भी खो जाएगा! इसका निहितार्थ यह है कि संघ में व्यक्तिगत अपेक्षाओं या किसी निहित स्वार्थ के वशीभूत होकर आने का कोई अर्थ नहीं है। अगर आपमें समाज के लिए कुछ करने की उत्कट भावना है, तो फिर आपको नि:स्वार्थ रूप से यथाशक्ति अपने तन-मन-धन से समाजकार्य में जुटना पड़ेगा। इसी तत्वनिष्ठा के भाव से प्रेरित होकर अनेक लोगों ने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समर्पित कर दिया और यह कोई साधारण बात नहीं है। अपने कैरियर, परिवार, कंचन एवं कामिनी का मोह त्यागकर केवल राष्ट्रहित में संलग्न होकर तपस्वीरूप कार्य की साधना करना अत्यंत दुष्कर है, इसके बावजूद भी संघ में कभी पूर्णकालिक स्वयंसेवक बनने वालों की संख्या कम नहीं रही, अपितु यह संख्या हर वर्ष लगातार बढ़ती ही जाती है, इससे संघ की समाज में व्यापकता एवं प्रभाव का सूचना प्राप्त होती है। संघ का कार्यक्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। वह समाज के हर व्यक्ति तक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से पहुँचा हुआ है। संघ की सोच यही रही है वह समाज में वह केवल एक मार्गदर्शक की भूमिका में रहे एवं सर्वस्पर्शी व सर्वग्राही हो।

संघ की शक्ति इसके स्वयंसेवक तो हैं ही, मगर उससे अधिक समाज की वह अदृष्ट सज्जन शक्ति भी है, जो संघ की विचारधारा का समर्थन करती है। संघ ने यह शक्ति किसी छल-बल से प्राप्त नहीं की है, बल्कि बिना यश के समाज के लिए किए गए पुण्यकार्यों से कमाई है; छीनी नहीं, वरन् अर्जित की है। संघ स्वयं के प्रचार में विश्वास नहीं रखता, बल्कि राष्ट्रीय भावना के विचारों के प्रचार एवं प्रसार में ही उसकी रूचि रही है। आज के डिजिटल युग की भी अपनी विवशताएँ हैं, इसलिए आरोप लगाये जाने पर प्रत्युत्तर दिये जाने का उत्तरदायित्व भी बनता ही है, क्योंकि समय के साथ प्रत्यक्ष युद्ध की प्रासंगिकता गौण हो गई है एवं आजकल युद्ध वैचारिक मैदानों पर लड़े जाने लगे हैं और सोशल मीडिया का उपयोग झूठ फैलाने एवं फेक नैरेटिव स्थापित करने के लिए भी किया जाने लगा है। पहले-पहल जब संघ अपने स्वरुप में आया, तो एक धड़े ने पूर्वाग्रहस्वरूप यह दुष्प्रचार प्रारंभ कर दिया था कि यह एक अतिवादी समूह है, जबकि समय साक्षी है कि संघ पर लगे थोथले आरोपों में कोई सच्चाई नहीं थी। संघ पर लगे झूठे आरोपों की एक लम्बी सूची है, मगर संघ ने कभी आगे आकर स्पष्टीकरण इसलिए नहीं दिया कि उसका मानना है कि सत्य सदैव स्वयं ही प्रकट हो जाया करता है। 'साँच को आँच क्या' की भावना से सत्य समय आने पर सूर्य की भाँति प्रकट हो ही जाया करता है।

आरोपों की स्थिति तो ऐसी थी कि 1966 में इंदिरा गाँधी नीत कांग्रेस की केन्द्र सरकार ने जमात-ए-इस्लामी के साथ ही केंद्रीय कर्मचारियों को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा एवं कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रतिबंधित कर दिया गया था। गौरतलब है कि प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की तुलना जमात-ए-इस्लामी जैसे एक कट्टर इस्लामिक एवं राजनीतिक संगठन से की थी, जबकि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक पूर्णत: सामाजिक एवं गैर-राजनीतिक संगठन है। इतनी सी बात को समझने में केन्द्र सरकारों को 58 वर्षों से अधिक का समय लग गया। प्रतिबंध के बावजूद संघ ने अपना कार्य मौन रूप से निर्बाध जारी रखा। समाज ने स्वयं आगे आकर 58 वर्षों बाद ही सही, मगर इस प्रतिबन्ध को समाप्त करवा दिया, जिसके सम्बंध में मध्यप्रदेश की माननीय उच्च न्यायालय की इन्दौर खण्डपीठ ने एक महत्वपूर्ण, परंतु कठोर टिप्पणी की कि केन्द्र सरकार को अपनी गलती का अहसास करने में 50 वर्षों से अधिक का समय लग गया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध सामाजिक संगठन को गलत तरीके से सरकारी कर्मचारियों के लिए प्रतिबंधित संगठनों की सूची में रखा गया। न्यायालय ने यह भी कहा कि संघ पर प्रतिबंध तात्कालीन सरकार की अदूरदर्शिता एवं एक सनक का परिणाम थी। ❐

जहाँ शिव, वहाँ आनन्द

■ इन्दिरा मोहन

जैसे आकाश में मेघमाला, सरोवर में तरंग, सूर्य में तेज वैसे ही शिव जगत के कण-कण में व्याप्त हैं। हम सब उनकी उपासना करते हैं, पुष्प, बेलपत्र तथा नैवेद्य चढ़ाते हैं, किन्तु क्या शिवत्व को जीवन में उतारते हैं? क्या इन सिद्धांतों पर चलते हैं जिसके शिव प्रवर्तक हैं।

शिव जी का सारा जीवन बुराइयों का नाश और भलाई की स्थापना के लिये है। उन्होंने विश्व ही नहीं देवताओं के कल्याण के लिये कंठ में विष धारण किया और नील कंठ कहलाए। दानवों का दमन कर शिवत्व की स्थापना की। शिव समन्वय, सहिष्णुता, प्रेम, शान्ति और कल्याण के आधार हैं, तभी वे पुराणों में सारे विरोधी भावों का सामंजस्य करने वाले देव के रूप में चित्रित किए गये हैं। शिव अर्धनारीश्वर होकर भी काम विजेता, गृहस्थ होते हुए भी गृहस्थी के प्रपंचों से दूर, भोग सुविधाओं से परे तपस्वी समाधिस्थ हैं। भयंकर सांप और सौम्य चन्द्रमा दोनों उनके शरीर की शोभा हैं। मस्तक में प्रलय कालीन अग्नि, सिर पर हिम शीतल गंगा का श्रृंगार। सहज बैर भुला कर साथ-साथ क्रीड़ा करते वृषभ, सिंह, मोर और सांप। न्याय एवं प्रेम शासन का कितना आदर्श रूप भगवान शंकर प्रस्तुत करते हैं। शिव प्रेम स्वरूप हैं, कल्याण स्वरूप हैं इसलिए इन विरोधों को हंसते-हंसते सहन करते हैं।

जीवन की पूर्णता बंटने में नहीं, बिखरने में नहीं एक होने में है। जगत में

द्वन्द्व तो रहेगा ही सुख-दुख, पाप-पुण्य, जीवन-मरण, धूप-छाया की भांति सदैव साथ-साथ रहते हैं। अतः अपने में शिवत्व जागृत कर संसार के विष को पीना होगा। हमें केवल अपने लिये नहीं, दूसरों की भलाई के बारे में सोचना है। प्राणीमात्र को एक सूत्र में बांधने वाली शक्ति प्रेम है, प्रेम का आधार शिवत्व ही है। शिवत्व अर्थात कल्याण के उच्चतर स्तर पर उठना जहां दूसरा कोई शेष न रहे। सबमें वही एक चेतन तत्व विराजमान है फिर भेदभाव कैसा। यह सत्य ही शिवत्व है। हम सबके हृदय में शान्त, स्थिर और अचल रूप से रमने वाला एक ही शिव तत्व विष्णु रूप से धारण-पोषण करता है, रूद्र रूप से संहार करता है और ब्रह्मा रूप से उत्पन्न करता है।

यूं तो शिव सदा सौम्य हैं, किन्तु संसार के अनर्थों पर दृष्टि डालते ही भयंकर हो जाते हैं। सृष्टि क्रम ठीक-ठाक चले तो कल्याण अन्यथा रूलाने वाले रूद्र। वे अज्ञान के उन बन्धनों का भी संहार करते हैं जो आत्मा को बांधे रखते हैं। वे संहार करते हैं कि अज्ञान नष्ट हो, मोह दूर हो, गर्व चूर हो, लोभ निर्मूल हो, आसुरी भाव एवं रूप जल कर शुद्ध हो। उनकी भीषण निदर्यता में उनके हृदय की करुणा छिपी है, दया छिपी है। वे तो केवल मनुष्य ही नहीं, प्राणीमात्र का कल्याण चाहते हैं।

वास्तव में वे हमारे जीवन की ऊर्जा हैं, चेतना हैं। तेज, बल, ज्ञान और बलिदान का आधार हैं जिसके निकलते ही शरीर शव हो जाता है और जला कर पंचभूतों में मिला दिया जाता है। और अस्थिर बुद्धि को महत्व देते रहेंगे। हमारी वास्तविक शक्ति सीमित व कुंठित होती जाएगी। इसके विपरीत शिव का स्पर्श जितना प्रगाढ़ होगा उतना ही हमारा व्यक्तित्व सात्विक बुद्धि से मुक्त व्यवहार में कुशल एवं मंगल मय विचारों से परिपूर्ण हो सकेगा। तब हम अपने मार्ग के साथ-साथ दूसरों का पथ भी आत्मज्ञान से आलोकित कर सकेंगे।

शिव तत्व तो गंगा है। जितनी बार उनके नाम-स्मरण, स्वरूप-चिन्तन में डुबकी लगाओ, ज्ञान-भक्ति-उपासना से भरी अंजुरी छलक-छलक कर आसपास आनन्द बिखेरती जाएगी। ये आनन्द वस्तुओं के जोड़ने का आनन्द नहीं, सुविधा का आनन्द नहीं, सत्ता के संचय का भी आनन्द नहीं वरन सबसे जुड़ने का सबसे एक होने का सहज आनन्द है जहां प्रशांति ही प्रशांति है, पवित्रता ही पवित्रता है, प्रेम ही प्रेम है। ❐

युवाशक्ति और सेवा

■ विजय सिंह माली

किसी भी देश का भविष्य उस देश की युवाशक्ति पर निर्भर करता है जो वायु की गति से भी तेज चलने वाला हो, जिसकी सोच सकारात्मक हो। हमेशा यह सोचे कि उसे कुछ नया करना है। जिसका जीवन उत्साह से भरा हो और हर सुबह एक नये विचार से उसके जीवन का प्रारम्भ होता हो, वही तो युवा है। युवा देश के लिए वरदान है, युवा देश की आन-बान-शान है। युवाओं के हृदय में कुछ अपने महान लक्ष्य, उद्देश्य, आकांक्षाएं, कामनाएं होती हैं। दृढ़ संकल्प और खतरों से खेलने की भावना होती है, इसलिए भारतीय परंपरा सदा से युवाओं का अभिनंदन करती है- ''नमो युवभ्य:''।

जब-जब भारत का युवा जागा है विवेकानंद, वीर हकीकत, भगत सिंह, लक्ष्मीबाई का उदय हुआ है। आर्यभट्ट, सीवी रमन, कल्पना चावला, पीवी सिंधु, लता मंगेशकर, होमी जहांगीर भाभा का उदय हुआ है। इस देश के युवाओ! जागो, जड़ता तोड़ो, आगे आओ, संगठित होकर कदम बढ़ाओ, फिर से मुक्ति मशाल जलाओ, जाग युवा जाग। जीवन का अर्थ केवल खाओ, पियो, मौज करो के दर्शन तक सीमित नहीं है। मनुष्य जीवन ईश्वर की एक अनुपम भेंट है।

नयनों में माता का वैभव,
मन में मां की पीर रहे।
पूर्ण करेंगे स्वप्न नयन के,
मन का यह संकल्प रहे।।

युवा शक्ति किसी भी देश का भविष्य ही नहीं वर्तमान भी होती है, वर्तमान की जागृत युवा शक्ति देश के उज्जवल भविष्य की आधार मानी जाती है।

भारत में आज आधी से अधिक आबादी युवाओं की है। इन युवाओं में सेवाभाव जागृत करना बहुत जरूरी है। त्याग और सेवा भारत के श्रेष्ठ आदर्श हैं। विवेकानंद जी का यह कथन हमें अंगीकार करना होगा। हमारी संस्कृति एवं परंपरा में सेवा दैनन्दिन धर्म का हिस्सा है। 'सेवा ही परम धर्म' अर्थात् सेवा को सबसे बड़ा धर्म कहा गया है। यही नहीं, हमारे मनीषियों ने यहा तक कहा है, ''शरीर सेवा के लिए ही बना है।'' एक बहुचर्चित संस्कृत श्लोक में कहा गया है-

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनं द्वयं।
परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीड़नम्॥

परमपूज्य श्रीगुरुजी के अनुसार सेवा, प्रेम एवं देशभक्ति का प्रकट रूप है। भारतीय चिंतन की दृष्टि से शायद नि:स्वार्थ भाव से, कर्तव्य भाव से, सेवा भाव से, पूजा पाठ से, दुर्बल, पीड़ित, शोषित, वंचित समाज की उन्नति या विकास तथा सामाजिक परिवर्तन हेतु किया हुआ कार्य है। स्वामी अखंडानंद जी का कथन है-''तन से सेवा, मन से भक्ति और बुद्धि से ज्ञान यह संपूर्ण जीवन है।'' स्वामी शरणानंद जी कहते हैं- ''यह शरीर सेवा के लिए मिला है, भोग के लिए नहीं। जो शरीर से सेवा नहीं करता, वह भोग में फंस जाता है और भोग में फंसकर भयंकर दुख में आबद्ध कर लेता है।''

युवाओं में सेवा भाव पल्लवित-पुष्पित हो इस हेतु उनमें सेवा संस्कार का सिंचन करना होगा। उन्हें सेवा गाथाओं से अगवत कराना होगा। उन्हें सेवा क्षेत्र अर्थात् शिक्षा, संस्कार, स्वास्थ्य, स्वावलंबन, स्वाभिमान, ग्राम विकास के लिए कारणीय सेवा कार्यों की जानकारी दी जानी चाहिए। ऐसी सेवाभावी युवाओं के बल पर ही भारत परम वैभव को प्राप्त कर पाएगा। ❐

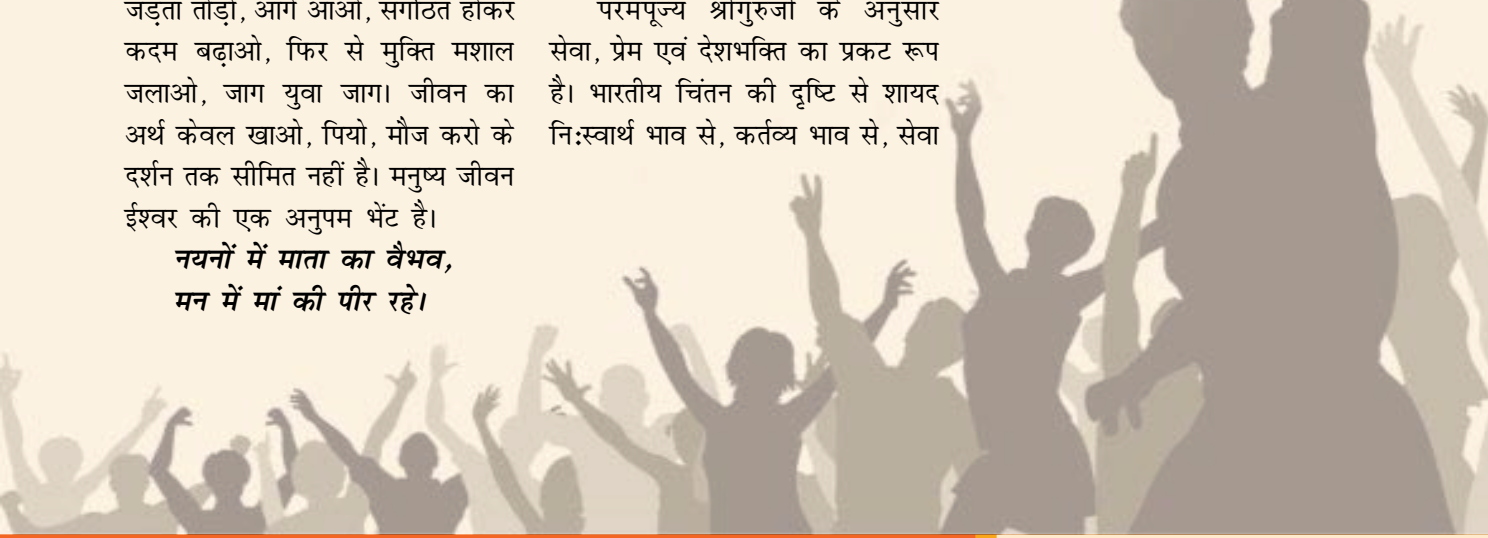

सनातन संस्कृति में सेवा और लोक-कल्याण का भाव

■ रिचा शर्मा

निरपेक्ष निस्वार्थ भाव से प्राणीमात्र की सेवा करना यह हिन्दू समाज का स्वभाव है। सामान्यत: हिंसा, पीड़ा, कष्ट देखकर हिन्दू-हृदय द्रवित होता है। यही कारण है कि अपनी संस्कृति में ''परोपकाराय पुण्याय, पापाय परपीड़नम्'' यानी दूसरों को दुख देने का व्यवहार करना पाप माना जाता है। दूसरों की सेवा करना पुण्य। प्यासे को पानी, भूखे को अन्न, अतिथि को सम्मान, ये सब कार्य श्रेष्ठ माने गए हैं।

पक्षियों को चुगने के लिए अन्न, पीने के लिए पनी, पशुओं को घास, पानी की व्यवस्था करना यह भारत के गांव-गांव में दिखाई देता है। मंदिर में जाने वाली बहनें थाल में आटा-गुड़ लेकर जाती हैं, ताकि चिड़ियों को खिलाया जा सके। यात्रा मार्ग पर घनी छाया हेतु वृक्ष लगाना, यात्रियों हेतु विश्रामगृह (धर्मशाला), खान-पान, चिकित्सा सुविधा करना यह पुण्य कार्य माना जाता है। समाज के सामान्य व्यक्ति से लेकर धनवान तक सभी यथाशक्ति सेवाभाव से ऐसे कार्य करते हैं। यह भारतीय जनमानस का स्वभाव है।

संन्यासी, महापुरुष, समाज-सुधारकों ने अपनी वाणी से, लेखन से, व्यवहार से यही मार्गदर्शन दिया है। संतश्री रविदास, कबीर, नरसी मेहता, तुकाराम, एकनाथ महाराज, गाडगे महाराज, नारायण गुरु ऐसे कई नाम लिए जा सकते हैं। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने तो 'नर सेवा, नारायण सेवा' का मंत्र देकर अपने अनुयायियों को सेवा की प्रेरणा दी। 'रामकृष्ण मिशन' तो आज सेवा का पर्याय बना हुआ है।

समाज के विभिन्न अभावों, समस्याओं का निवारण करने के भाव से अपना जीवन समर्पित करने वाले महात्मा फुले, महर्षि अण्णा साहेब कर्वे, राजा राममोहन राय, भगिनी निवेदिता, डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर, स्वामी दयानंद, महात्मा गांधी के आदर्श हमारे सम्मुख प्रस्तुत हैं, जो हमें सेवा की प्रेरणा देते हुए आए हैं। देश के कोने-कोने में भिन्न-भिन्न जातियों में जनमे ऐसे महापुरुष हमारी प्रेरणा के स्रोत हैं। यही अपने समाज की विशेषता है, दीर्घकालीन श्रेष्ठ परंपरा है।

इसी श्रेष्ठ भाव से प्रेरित संघ के लाखों स्वयंसेवक आत्मीयता तथा कर्तव्य भाव से प्रेरित होकर समाज की सेवा में लगे हैं, और यही कारण है कि किसी भी मानव निर्मित या प्राकृतिक आपदा में प्रांत, भाषा, पंथ के भेदों से ऊपर उठकर तत्काल राहत कार्य में संघ का स्वयंसेवक लग जाता है। फिर वह कोई छोटा-मोटा हादसा हो या भूकंप, तूफान, बाढ़ जैसा निसर्ग का तांडव नृत्य हो। अपने इस व्यवहार से ही समाज में संघ की यह छवि निर्मित हुई है। किसी ने कहा है कि आर.एस.एस. अर्थात् रेडी फॉर सेल्फलेस सर्विसेज।

यह भाव केवल आपदाओं तक सीमित नहीं रहा। नगरों में विभिन्न पंजीकृत संस्थाओं के माध्यम से तथा अखिल भारतीय स्तर पर स्थापित संस्थाओं जैसे-विश्व हिन्दू परिषद, वनवासी कल्याण आश्रम, विद्या भारती,

राष्ट्र सेविका समिति, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, दीनदयाल शोध संस्थान, भारत विकास परिषद, सेवा भारती, वनबंधु परिषद के माध्यम से लगभग तीन लाख से अधिक सेवा कार्य चल रहे हैं। जो अपने आप में एक कीर्तिमान है।

भिन्न-भिन्न स्थानों पर चलने वाले रक्त-कोष, गोवा, मुंबई, भाग्यनगर (हैदराबाद), बैंगलोर, दिल्ली, भोपाल आज कई स्थानों पर महिलाओं, अनाथ बालक-बालिकाओं के लिए कार्यकरत मातृछाया जैसे प्रकल्प और नेत्रहीन-बंधुओं के उत्थान हेतु कार्य करने वाला अखिल भारतीय दृष्टिहीन कल्याण संघ एवं वरदान जैसी संस्थाएं समाज में विश्वास तथा आशा का स्थान बनाने में सफल हुई हैं। केरल में बाल गोकुलम द्वारा चलने वाले हजारों केन्द्र, कर्नाटक में हिन्दू सेवा प्रतिष्ठान द्वारा सैकड़ों प्रशिक्षित सेवाव्रती, वनवासी क्षेत्रों में चलने वाले हजरों एकल विद्यालय, स्थान-स्थान पर कार्यरत ग्राम स्वास्थ्य रक्षक आदि सभी प्रकल्पों द्वारा स्वयंसेवक अपने प्रयासों से समाज परिवर्तन के कार्य में जी-जान से लगे हैं। रामकथा, कृष्णकथा का प्रशिक्षण लेकर ग्राम-ग्राम में अपनी वाणी से श्रद्धा जागरण का कार्य करने वाले भैया-बहिन वनवासी, ग्रामवासी में सुरक्षा का भाव निर्माण कर रहे हैं। सूची और बड़ी हो सकती है। सेवा करना किसी पंथ विशेष को अपना अधिकार समझने की आवश्यकता नहीं है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक सेवा के द्वारा समाज में स्वाभिमान, आत्मनिर्भरता, समरसता का भाव निर्माण करने का प्रयत्न कर रहे हैं। ❐

(सेवा पाथेय का सम्पादित अंश)

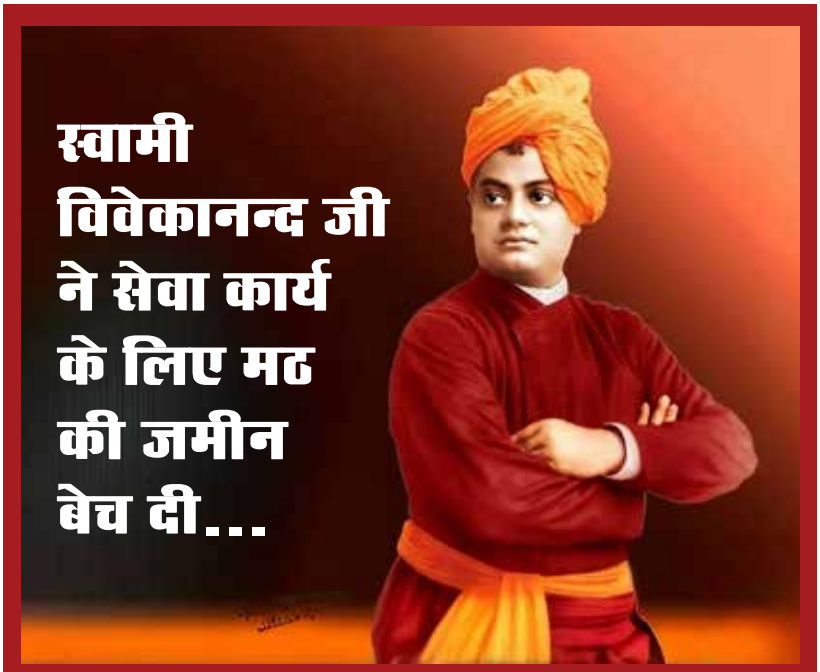

स्वामी विवेकानन्द जी ने सेवा कार्य के लिए मठ की जमीन बेच दी...

सन् 1898 ईस्वी में कोलकाता शहर प्लेग की महामारी से ग्रस्त था। चारों ओर मृत्यु तांडव मचा रही थी। लगभग प्रत्येक घर का कोई न कोई सदस्य प्लेग से पीड़ित था और मौत की भेंट चढ़ता जा रहा था। कोई पिता गंवा बैठा था कोई माँ। किसी का भाई नहीं रहा तो किसी ने बहन खो दी थी। जिन माता की गोद सूनी हो गई थी उनका कष्ट देखना भी असहनीय था। ऐसे भीषण संकट के दौर में रामकृष्ण मिशन महामारी से ग्रस्त लोगों की सहायता के लिए आगे आया। मिशन के लोग यथाशक्ति तन-मन-धन से लोगों की मदद करने लगे, किंतु एक समय ऐसा आया, जब मिशन के समक्ष आर्थिक संकट खड़ा हो गया, क्योंकि एक साल पहले ही मठ निर्माण के लिए मिशन ने जमीन खरीदी थी। स्वामी विवेकानंद उस समय हिमालय प्रवास पर थे और अस्वस्थ थे। फिर भी महामारी और मिशन के पास धन की कमी की बात सुनकर वे कोलकाता पहुंचे। वहां जाकर उनहोंने देखा कि किराए पर एक बड़ा मैदान लेकर उसमें शिविर लगाकर रोगियों का इलाज मिशन कर रहा था, किन्तु धन के अभाव के कारण सेवा कार्यों में बाधा आ रही थी। स्वामी जी ने तत्काल यह कहते हुए मठ की जमीन बेचने का आदेश दिया कि हम संन्यासी हैं, अतः हमें पेड़ की छांव में सोने और भिक्षा मांगकर खाने को तैयार रहना चाहिए। मठ का निर्माण भले ही न हो, किन्तु सेवा कार्य में बाधा नहीं आनी चाहिए। जमीन बेचकर असंख्य लोगों की जान बचाते हुए स्वामी जी ने 'साधु' शब्द को सच्चा गौरव प्रदान किया। वस्तुतः संन्यास तभी सफल होता है, जब उसमें प्रभु स्मरण और समर्पण के साथ मानवमात्र की सेवा का उदात्त भाव भी शामिल हो।

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः

■ अमर नाथ झा

रक्षाबंधन एक शब्द युग्म है जो दो शब्दों से बना है 'रक्षा' और 'बंधन'। इन दोनों शब्दों के एक साथ होने से परिलक्षित होता है कि कोई ऐसा बंधन जो रक्षा के निमित्त हो अथवा परस्पर रक्षा के उद्देश्य से किसी प्रकार का बंधन या संबंध। भारतीय संस्कृति में रक्षाबंधन एक पावन पर्व के रूप में प्रसिद्ध है एवं इसकी परम् विशिष्ट महत्ता है। 'राखी' के नाम से प्रचलित यह पर्व भारत सहित विश्व के अनेक देशों यथा नेपाल, मॉरीशस एवं पाकिस्तान आदि में श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। भाई और बहन के अटूट स्नेह-प्रेम की डोर, भाई का बहन के प्रति कर्तव्यनिष्ठा का संकल्प तथा बहन का भाई की सुख-समृद्धि के लिए की गई प्रार्थना इस त्योहार की पहचान के रूप में स्थापित हो चुका है। भाई एवं बहन का संबंध असाधारण है। भाई और बहन के बीच स्नेह-प्रेम की व्याख्या शब्दों से परे है, इसका वर्णन असंभव है, और संभवतः यही कारण है कि इस त्योहार को भाई-बहन के त्योहार के रूप में मान्यता प्राप्त है। परन्तु इस त्योहार की आत्मा है किसी को भी रक्षा का वचन देना और उसे निभाना। चाहे वह बहन हो, भाई हो, बड़ा हो छोटा हो। श्रद्धापूर्वक एक धागा/रक्षासूत्र बांध कर रक्षा का वचन देना और उस वचन को हर हाल में निभाना ही रक्षा बंधन के मूल में निहित है।

सामाजिक सद्भाव एवं समरसता के एक बड़े प्रतीक के रूप में भी इस त्योहार का वैशिष्ट्य है। समाज के किसी समर्थ या सक्षम द्वारा किसी कमजोर, वंचित या अक्षम व्यक्ति की रक्षा करना और समय पड़ने पर आवश्यकता अनुसार उसकी सहायता करना, रक्षासूत्र के बंधन के इस प्रकार के इतिहास में कई उदाहरण मिल जाएंगे।

सनातन संस्कृति के अभिन्न अंग जैन एवं सिख समाज में भी इस त्योहार को हर्ष और उल्लास के साथ मनाने की परम्परा है। जैन मुनि अपने अनुयायियों एवं भक्तों को एक प्रकार का धार्मिक धागा देते हैं। ऐसा माना जाता है कि यह धार्मिक सूत्र/धागा भक्तों व अनुयायियों की, हर प्रकार की नकारात्मक शक्तियों व सभी दुःखों से रक्षा करता है। जैन समाज द्वारा रक्षाबंधन लोकप्रिय जैन भिक्षु

विष्णु कुमार की याद में मनाया जाता है, जो भिक्षु बनने से पहले हस्तिनापुर के राजकुमार भी थे। सिख समाज में भी भाई-बहन के स्नेह के रूप में यह त्योहार 'रखारी' या 'रक्षा पूर्णिमा' के रूप में मनाया जाता है।

पौराणिक कथाओं में 'रक्षा-बंधन' से संबंधित कई प्रसंग मिलते हैं। भविष्य पुराण के अनुसार देवासुर संग्राम में जब देवताओं के राजा इंद्र को असुरों के राजा बलि से भयंकर युद्ध मे भरी प्रतिरोध का सामना करना पड़ रहा था, विजय प्राप्त करना तो दूर की बात, कई मास-दिवस तक युद्ध के पश्चात भी जय-पराजय का निर्णय नहीं हो पा रहा था। तब देवराज इंद्र की पत्नी शची भगवान विष्णु के पास गयीं और उनसे विनती की, भगवान विष्णु ने शची को सूती धागे से बना एक पवित्र कंगन दिया। शची ने अपने पति, इंद्र की कलाई पर वह पवित्र धागा बांधा, और अंततः उनकी विजय हुई। उस कालखंड में इन पवित्र धागों को एक यंत्री (ताबीज) के रूप में माना गया, जिसका उपयोग महिलाएं प्रार्थना के लिए करती थीं और युद्ध के लिए जा रहे अपने पति को बांध ती थीं। वर्तमान समय के विपरीत, वे पवित्र धागे भाई-बहन के रिश्तों तक ही सीमित नहीं थे।

ऐसा ही एक प्रसंग भागवत पुराण में आता है जिसके अनुसार, जब भगवान विष्णु ने राक्षस राजा बलि से तीन पग में तीनों लोकों को जीत लिया, बलि ने भगवान से उसके महल में अपने पास रहने का आग्रह किया और ऐसा वरदान मांग लिया। भगवान ने तथास्तु कहकर उसका आग्रह स्वीकार कर लिया और राक्षस राजा के साथ ही रहने लगे। भगवान विष्णु की पत्नी देवी लक्ष्मी भगवान विष्णु को उनके मूल स्थान वैकुंठ वापस लाना चाहती थीं। इसलिए, उन्होंने राक्षस राजा बलि की कलाई पर राखी बांधी और उसे अपना भाई बनाया। वापसी उपहार के बारे में पूछने पर, देवी लक्ष्मी ने राक्षसराज बलि से अपने पति को प्रतिज्ञा से मुक्त करने और उन्हें वैकुंठ लौटने की अनुमति देने के लिए कहा। बलि ने अनुरोध स्वीकार कर लिया और भगवान विष्णु अपनी पत्नी देवी लक्ष्मी के साथ अपने स्थान पर लौट आए।

रक्षा सूत्र बांधते हुए इस श्लोक का पाठ किया जाता है:

येन बद्धो बली राजा
दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वाम् अभिबध्नामि
रक्षे मा चल मा चल॥

जिसका भावार्थ है जिस रक्षासूत्र से महान शक्तिशाली दानवेन्द्र राजा बलि को बांधा गया था, उसी सूत्र को मैं तुम्हें बांधती हूं, जो तुम्हारी रक्षा करेगा, हे रक्षा तुम स्थिर रहना, स्थिर रहना।

रक्षाबंधन से जुड़े एक अन्य प्रचलित कथा में संतोषी मां का प्रसंग आता है। कहा जाता है कि भगवान गणेश के दोनों पुत्र शुभ और लाभ इस बात से निराश थे कि उनकी कोई बहन नहीं है। दोनों भाइयों ने अपने पिता से एक बहन की मांग की, जो अंततः नारद मुनि के हस्तक्षेप पर भगवान गणेश ने दिव्य ज्वालाओं के माध्यम से संतोषी मां को प्रकट किया और भगवान गणेश के दोनों पुत्रों को रक्षाबंधन के अवसर पर अपनी बहन मिल गई।

महाभारत के एक वृत्तांत के आधार पर एक महत्त्वपूर्ण प्रसंग आता है। भगवान श्री कृष्ण ने शिशुपाल की सौवीं गलती पर उसके वध के लिए सुदर्शन चक्र चलाया और उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। सुदर्शन चक्र वापसी के दौरान भगवान कृष्ण की उंगली से रक्त बहने लगा, द्रौपदी ने जब यह देखा तो तत्क्षण अपनी साड़ी का किनारा फाड़ कर कृष्ण की उंगलियों में लपेट कर पट्टी कर दी। भगवान श्रीकृष्ण पांचाली के इस भावुक स्नेह-बंधन से इतना अधिक प्रभावित हुए कि उन्होंने द्रौपदी को मुसीबत के समय रक्षा करने का वचन दे दिया और कुछ समय पश्चात कौरवों ने जब भरी सभा में पांडव पत्नी द्रौपदी को निर्वस्त्र करना चाहा तब भगवान कृष्ण ने उसकी लाज बचाई। इस प्रकार उन्होंने द्रौपदी की रक्षा करने का अपना वचन निभाया। महाभारत में ही एक और प्रसंग आता है जब कुंती ने पोते अभिमन्यु को राखी बांधी थी।

सतयुग से लेकर कलयुग तक चतुर्युग में रक्षाबंधन का विशिष्ट उल्लेख है। विविधता से भरे हमारे देश के कई हिस्सों में रोजमर्रा की वस्तुएं यथा साईकिल, यंत्र-उपकरण, वृक्षादि को भी रक्षा सूत्र बाँधने की परंपरा है। घर के बुजुर्ग, बच्चों को राखी बांधते हैं। विद्या अर्जन करने वाले विद्यार्थी अपने पुस्तकों में राखी का धागा रखते हैं। अनेक स्थानों पर मंदिरों में भगवान को रक्षा सूत्र अर्पित किया जाता है। ऐसा ही एक और प्रसंग ध्यान में आता है जब एक बच्ची जिसका भाई नहीं था भगवान कृष्ण के बाल रूप लड्डू गोपाल को भाई मानकर उनको राखी बांधती है और किस प्रकार आस्था व विश्वास के बल पर उस बच्ची की रक्षा के लिए स्वयं भगवान् को आना पड़ा था।

अत: जिनके भाई नहीं वह भगवान को राखी बांधते हैं। कलियुग में हर जगह विद्यमान हनुमान जी को रक्षासूत्र बाँधने की विशेष महत्ता है।

सृष्टि के प्रारंभ से लेकर आजतक भी ऐसे कई प्रमाण मिलते हैं जब समाज को सुन्दर और समरस बनाने के लिए धरती पर अवतार लेने वाले भगवान से लेकर महापुरुषों ने रक्षाबंधन सदृश त्योहार और अवसर प्रदान कर समाज को ऊंच-नीच, भेदभावपूर्ण विषयों और कुरीतियों से निकाल कर सही राह दिखाई है। रक्षाबंधन का त्योहार जहाँ भाई-बहन के अटूट प्रेम का परिचायक है, वहीं समाज के वंचित वर्गों में सुरक्षा का भाव भरने वाला, एक-दूसरे के लिए विपरीत परिस्थितियों में साथ देने के भाव से ओतप्रोत कर देने वाला त्योहार भी है। यही कारण है कि रक्षाबंधन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वर्ष भर में आयोजित होने वाले 6 मुख्य उत्सवों में से एक है जिसे वृहत स्तर पर संगठन के द्वारा अनिवार्य रूप से मनाया जाता है। इस अवसर पर स्वयंसेवक एक दूसरे को राखी/रक्षा सूत्र बांधकर रक्षा करने की प्रतिज्ञा करते हैं। संघ के स्वयंसेवक और कार्यकर्ता सेवा बस्तियों में जाकर समाज के वंचित वर्ग को रक्षा सूत्र बांधते और बंधवाते हैं तथा उनकी रक्षा करने का प्रण लेते हैं। संघ के पाँचवें सरसंघचालक पूजनीय कुपहल्ली सीतारमैया सुदर्शन जी ने भी दिल्ली प्रान्त के मायापुरी नामक स्थान के अन्तर्गत आने वाली सेवा बस्तियों में जाकर उन बस्तियों के निवासियों के साथ रक्षाबंधन का त्योहार मनाया था। इन्ही आदर्शों और संघ द्वारा स्थापित परंपरा को ध्यान में रखते हुए सेवा भारती द्वारा निरंतर दिल्ली की सेवा बस्तियों में रहने वाले लोगों के बीच रक्षाबंधन उत्सव मनाया जाता है। सेवा बस्तियों में शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन और सामाजिक संस्कार के लिए प्रयासरत सभी केंद्रों पर प्रत्येक वर्ष रक्षाबंधन का पर्व मनाकर सामाजिक सद्भाव एवं समरसता का सन्देश देने की दिशा में सेवा भारती अनवरत प्रयत्नशील है। ❐

(लेखक सेवा भारती, रामकृष्णपुरम विभाग के मंत्री हैं)

चातुर्मास का महत्व

■ **विनीता अग्निहोत्री**

चातुर्मास अर्थात् चार मास- ये चार मास होते हैं- आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि से कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तक। इन चार महीनों में भगवान विष्णु योग निन्द्रा में चले जाते हैं और सृष्टि का संचालन भगवान शिव के हाथों में आ जाता है।

चातुर्मास का हमारे पुराणों में अत्यधिक महत्व वर्णित है। इन चार महीनों में अनेक शुभ कार्य वर्जित हैं जैसे- गृह प्रवेश, विवाह, मुंडन, नया वाहन खरीददारी आदि। इसके अलावा कहीं एक ही स्थान पर रहकर पूजा, पाठ, ध्यान, जप, तप, स्वाध्याय की महिमा बताई गई है हमारे धर्म शास्त्रों में। कुछ धार्मिक लोग इन नियमों का दृढ़ता से पालन करते हैं और खान-पान के नियमों का भी पालन करते हैं जैसे- हरी पत्तेदार सब्जियां खाना मना बताया गया है। इसके अलावा गरिष्ठ भोजन, प्याज, लहसुन, मांसाहार तो बिल्कुल वर्जित है। कुछ भक्तजन सारे नियमों का पालन करते हुये एक समय ही भोजन करते हैं और कुछ लोग एक समय भी भोजन नहीं करते बस फलाहार ही करते हैं और बिस्तर पर भी नहीं सोते, जमीन पर सोते हैं। झूठ का भी परित्याग कर देते हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से भी चातुर्मास का बहुत महत्व बताया गया है। ये चार महीने में बारिश और मौसम बदलाव के होते हैं अत: तमाम बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। इसलिये खान-पान की चीजों में परहेज बताया गया है। प्राचीन समय में यातायात के साधन अधिक नहीं होते थे, तो रास्तों में घास उग आती थी, जल भर जाता था, मार्ग उबड़-खाबड़ हो जाते थे, कभी भी बारिश होने लगती थी। अत: पैदल चलना कठिन हो जाता था। इसीलिये एक ही स्थान पर रहकर व्यक्ति समय व्यतीत करते थे।

अत: कहा जा सकता है कि हिन्दू धर्म के अनुसार पुराणों में वर्णित नियमों का यथासंभव पालन करते हुये भगवान विष्णु की पूजा करनी चाहिये चार्तुमास में। इससे हमारी भक्ति में भी वृद्धि होती है जो जीवन के उद्धार के लिये और मोक्ष प्राप्ति के लिये अत्यावश्यक है और हम बीमारियों से भी बचे रहते हैं। कहा भी गया है-

चातुर्मास के महीने चार।
रखते हैं अपनी महिमा अपार॥
अगर बदले हम आचार विचार।
हो जायेंगे भवसागर से पार॥ ❐

भाई का साथ

बाजार से घर लौटते वक्त एक लड़की का कुछ खाने का मन किया, तो वह रास्ते में खड़े ठेले वाले के पास भेलपुरी लेने के लिए रुक गई। उसे अकेली खड़ी देख, पास ही की एक पान की दुकान पर खड़े कुछ मनचले भी वहां आ गए। उन लड़कों की घूरती आंखें लड़की को असहज कर रही थीं, पर वह ठेले वाले को पहले पैसे दे चुकी थी, इसलिए मन कड़का करके खड़ी रही।

द्विअर्थी गानों के बोल के साथ आंखों में लगी अदृश्य अश्लील दूरबीन से सब लड़के उसको गहरी नजर से देख रहे थे, हंस रहे थे और भद्दे मजाक कर रहे थे।

अनमन्यस्क होकर वह कभी दुपट्टे को ठीक करती, तो कभी ठेले वाले से और जल्दी करने को कहती। उन मनचलों की जुगलबंदी अभी चल ही रही थी कि कबाब में हड्डी की तरह एक बाइक सवार युवक वहां आकर रुका। बाइक सवार युवक ने लड़की से कहा-अरे पूनम...तू यहां क्या कर रही है? 'हम्म...! अपने भाई से छुपकर पेट पूजा हो रही है।'

ऊंची पूरी कद काठी के भाई से संभावित खतरे को भांपकर वो सभी मनचले तुरन्त इधर-उधर खिसक लिए। समस्या से मिले अनपेक्षित समाधान से लड़की ने राहत की सांस ली, फिर असमंजस भरे भाव के साथ उस बाइक सवार युवक से कहा माफ कीजिए, मेरा नाम एकता है। आपके शायद गलतफहमी हुई है, मैं आपकी बहन नहीं हूं। 'मैं जानता हूं...! मगर किसी की तो बहन हो'। इतना कहकर युवक ने मुस्कुराते हुए हेलमेट पहना और अपने रास्ते चल दिया। ❐

(सोशल नेटवर्किंग साइट से साभार)

राखी

नेहपूर्ण ये डोर पहुंचा कर आसीस
डूब गई असुअन में कि मैं ना सही
ये डोर तो तुझसे मिली है।

भर कर ढेर सी खुशियां भाई के माथे
पर लगा वो तिलक दिनकर की लालिमा
सा चमका होगा चेहरा
यही सोच आज मुस्कान खिली है।

पावन पर्व सकुशल आशाएं सम्मोहित करें
हर बार कि भाई बहन के असीम स्नेह के दर्शन की
धरा भी घर से निकली है।

अटूट बंधन हठी मन आतुर की
अंबर से भी ऊंचा शिखर ही तेरा
प्रार्थना यही हर बार हृदय से निकली है। ❐

-सुमनजीत (पत्रिका से साभार)

माननीय सोहन सिंह जी की स्मृति में विशेष

व्यवस्था और अनुशासन के पर्याय

■ प्रतिनिधि

राजस्थान में करीब 20 साल तक एक तपस्वी जीवन जीने वाले श्री सोहन सिंह जी को प्रदेश में संघ कार्य को युद्ध गति से विस्तार देने वाले योद्धा प्रचारक के रूप में जाना जाता है। जब वे राजस्थान आए थे तब यहां मात्र 500 शाखाएं थीं। उन्होंने प्राण-प्रण प्रयास करके उसे दुगुना कर दिया। हर जिले, हर तहसील और कस्बे में उन्होंने समर्थ और सक्षम कार्यकर्ताओं की टोली तैयार की। वे कठोर जीवन जीने वाले कार्यकर्ता रहे। न्यून से न्यूनतम आवश्यकताओं में अपना जीवन बसर करते थे। राजस्थान में 1972 में आए और वर्ष 1987 तक यहां रहे। उनकी सबसे बड़ी विशेषता है कि उन्होंने दायित्व का सफल निर्वहन करने वाले स्वयंसेवकों का चयन कर उन्हें काम करने के लिए नियुक्त किया। अपनी बात सहज, लेकिन प्रभावी तरीके से कहते थे। उनका कहना था कि भारत गांवों का देश है, गांवों से ही राष्ट्रीयता मजबूत होगी। हर गांव में संगठित हिन्दू शक्ति खड़ी हो, इसी को ध्यान में रखकर

काम बढ़ाना होगा।

सोहन सिंह जी यानी "व्यवस्था" और अनुशासन के पर्याय। वर्ष 1985 में 'पाथेयकण' प्रारंभ हुआ। उसे गांव-गांव तक पहुंचाने की योजना उन्होंने ही बनाई। आज पाथेयकण की प्रसार संख्या 1 लाख 50 हजार है। उ.प्र. के जिला बुलंदशहर के हर्चना गांव में 1923 की विजयादशमी के दिन सोहन सिंह जी का जन्म हुआ। 1942 में बी.एससी. की अन्तिम वर्ष की परीक्षा उन्होंने दी, लेकिन एक आन्दोलन में विश्वविद्यालय का रिकार्ड जल जाने की वजह से परिणाम घोषित नहीं हो पाया। छात्र रहते हुए ही वे संघ के सम्पर्क में आ गए। 1943 में मेरठ, 1944 में मेरठ और 1945 में नागपुर में क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय वर्ष का संघ प्रशिक्षण प्राप्त किया। सर्वप्रथम वे दिल्ली में सायं मण्डल कार्यवाह बने। इसके बाद वे करनाल, अम्बाला छावनी, फिर करनाल, हरियाणा संभाग में तहसील प्रचारक से विभाग प्रचारक तक रहे। 1972 में वे जयपुर आ गए। 1987 तक वे विभाग, संभाग और बाद में प्रान्त प्रचारक बने। उसके बाद वे दिल्ली में धर्म जागरण अभियान से जुड़ गए। वर्ष 2000-2004 तक वे उत्तर क्षेत्र के प्रचारक प्रमुख रहे।

सोहनसिंह जी राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, जम्मू-कश्मीर के प्रचारक रहे। माननीय सोहनसिंह जी का स्वर्गवास 4 जुलाई, 2015 को 93 वर्ष की आयु में केशवकुंज झंडेवाला, दिल्ली में रात्रि 11.40 बजे हो गया। ❐

मुश्किल वक्त हमारे लिए आईने की तरह होता है जो हमारी क्षमताओं का सही आभास हमें कराता है।

तमस दूर करती मातृछाया

संसार में ऐसे शिशुओं की कमी नहीं है, जिन्हें जन्म के बाद से ही अपनों का साथ नहीं मिलता। जन्म के तुरन्त बाद किसी अस्पताल, कूड़े के ढेर या पुलिस स्टेशन से अपने निराश्रित जीवन का प्रारंभ करने वाले इन बेसहारा शिशुओं की समाज में दयनीय स्थिति और उनकी परवरिश में आने वाली समस्याओं का अनुभव आसानी से लगाया जा सकता है। इनमें से अधिकांश नवजात शिशु तो चिकित्सा सहायता के अभाव में असमय ही काल-कवलित हो जाते हैं या कुछ जन्मजात अस्वस्थ हो जाते हैं। ऐसे शिशुओं के पालन-पोषण और उनके जीवन को बेहतर बनाने के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराना, समाज एवं राष्ट्र दोनों का ही कर्तव्य है। इसी कर्तव्य को निभाने के लिए सेवा भारती, दिल्ली दो मातृछाया केन्द्रों का संचालन करती है। एक है पीरागढ़ी के पास मियांवाली नगर में और दूसरा है पहाड़गंज से सदर बाजार जाने के रास्ते में सदर थाने के पास।

'मातृछाया' अर्थात् ममता की छांव। आज के स्वार्थपूर्ण युग में जहां आर्थिक आधार पर ही सारे संबंध निधारित किए जाते हैं, नि:स्वार्थ व समर्पण भाव से समाज सेवा करना, विशेष रूप से निराश्रित शिशुओं को आश्रय प्रदान करना, नैतिक मूल्यों के साथ-साथ मानवता की उदात्त भावना का सुखद प्रतिबिंब दर्शाता है।

मातृछाया में उन निराश्रित शिशुओं को आश्रय दिया जाता है, जिन्हें उनके माता-पिता चाह कर भी अपनाने में असमर्थ होते हैं। यहां शिशुओं के उज्ज्वल भविष्य के लिए सर्वोत्तम परिवार ढूंढने की कोशिश की जाती है। मातृछया से जुड़ा हर सदस्य मन, कर्म एवं वचन से इन शिशुओं के पालन-पोषण में तब तक जुटा रहता है, जब तक कि नवजात शिशु को नया परिवार नहीं मिल जाता। यहां बच्चों की देखभाल के लिए चिकित्सक एवं स्वास्थ्यकर्मी हर पल मौजूद रहते हैं। सभी बच्चों की सफाई, स्वास्थ्य तथा पोषण का ध्यान रखा जाता है। बच्चों को उम्र के अनुसार भोजन, दूध, फल आदि दिया जाता है।

उद्देश्य - मातृछाया अपनी ममता की छाँव तले इन बच्चों का लालन-पालन करती है तथा नि:संतान दम्पत्तियों को गोद देती है, ताकि ये निराश्रित बच्चे समाज में अपना उचित स्थान हासिल कर सकें और इन्हें एक उज्ज्वल सम्मानित जीवन मिल सके। मातृछाया का एकमात्र लक्ष्य, समाज के इन उपेक्षित अबोध नन्हें बच्चों, इन मासूम फूलों को समाज की क्यारी में पनपाना व सहेजना है, ताकि आने वाले कल में ये अपनी खूशबू और अपनी

योग्यता से पूरी दुनिया को महका सकें।

यह संस्था वास्तव में नि:संतान दम्पत्तियों तथा इन मासूस बेसहारा शिशुओं के बीच एक सेतु की तरह कार्य करती है, ताकि दोनों की जिंदगी खुशियों से भर जाए। संस्था द्वारा बच्चों को गोद देने की कानूनी प्रक्रिया अत्यंत सरल है। सर्वप्रथम शिशु गोद लेने वाले दंपति को अपना पंजीकरण करवाना पड़ता है तथा एक वैधानिक प्रक्रिया के बाद ही शिशु गोद दिया जाता है।

इस प्रकार यह संस्था मानवता के उदात्त मूल्यों तथा नैतिकता के उच्च मानदंडों के अनुरूप नि:स्वार्थ भाव से निराश्रित शिशुओं के भविष्य को संवारने में लगी है जो न सिर्फ अनुकरणीय है, बल्कि ऐसी ज्योति है जिसके आलोक से कितने ही अंधकार से घिरे जीवन प्रकाशमान हो चुके हैं।

कैसे प्राप्त होते हैं शिशु – सेवा भारती मातृछाया के दोनों केन्द्रों के गेट पर ही पालने लगे हैं। कुछ परिवार बच्चे को पालने में रख कर चले जाते हैं। कुछ माताएं, जो बच्चा नहीं चाहतीं, या उनके परिवार वाले नवजात शिशु को किसी अस्पताल, पुलिस स्टेशन, पार्क या अज्ञात स्थान पर छोड़ कर चले जाते हैं। वहां से मातृछाया को फोन आने या जानकारी मिलने पर सेवा भारती मातृछाया के कार्यकर्ता वहां पहुंच कर बच्चे को ले आते हैं तथा मातृछाया में उनकी सम्पूर्ण स्वास्थ्य जांच की जाती है। डॉक्टर बच्चे की जन्मतिथि निर्धारित करते हैं तथा संस्था द्वारा बच्चे को नाम दिया जाता है। बच्चे के माता-पिता/अभिभावक को खोजने के लिए शिशु का फोटो दूरदर्शन, रेडियो, चार मुख्य समाचार पत्रों, जिनमें दो अंग्रेजी व दो हिन्दी भाषा के, पुलिस स्टेशन, खोये व्यक्तियों के विभाग, समाज कल्याण विभाग, सेन्ट्रल एडॉप्शन रिसोर्स अथॉरिटी, चाईल्ड वेलफेयर कमेटी तथा क्षेत्रीय उपायुक्त, पुलिस को सूचनार्थ दिया जाता है कि उक्त शिशु सेवा भारती मातृछाया के पास है। यदि माता-पिता या अभिभावक उसे वापस अपनाना चाहता है तो वह मातृछाया से सम्पर्क कर सकता है। एक निश्चित समय (एक माह) की प्रतीक्षा के बाद चाईल्ड वेलफेयर कमेटी को इस हेतु अनापत्ति प्रमाणपत्र (नो आब्जेक्शन सर्टिफिकेट) जारी करने के लिए आवेदन किया जाता है। वहां से एक निरीक्षक आकर संबंधित दस्तावेजों की जांच करता है। सत्यापन के बाद ही चाईल्ड वेलफेयर कमेटी द्वारा बच्चे को गोद देने के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र जारी किया जाता है।

शिशु गोद लेने के इच्छुक दम्पति द्वारा नियमानुसार कानूनी दस्तावेज जमा करने के बाद ही उनकी इच्छानुसार उन्हें शिशु दिखाया जाता है। यदि दम्पति बच्चे की स्वास्थ्य जांच अपने सतर पर किसी डॉक्टर से करना चाहता है, तो वह ऐसा कर सकता है। न्यायालय की स्वीकृति के बाद सेवा भारती मातृछाया व दत्तक परिवार के बीच 'एडॉप्शन डीड' बनाई जाती है और बच्चे को उसके वैधानिक अधिकारों सहित गोद दिया जाता है। सेवा भारती मातृछाया के दोनों केन्द्रों द्वारा अब तक सैकड़ों बालक-बालिकाओं को सुसंस्कृत परिवारों को गोद दिया जा चुका है।

प्रक्रिया – बच्चों का पालन-पोषण कर सकने वाले तथा नि:संतान दंपतियों को बारी के आधार पर कानूनी प्रक्रिया द्वारा शिशु गोद दिया जाता है। ऐसे कोई भी दम्पति शिशु गोद ले सकते हैं जो --

- आर्थिक दृष्टि से सशक्त हों।
- मानसिक और शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ हों तथा उनकी आयु 45 वर्ष से कम हो।
- शिशु गोद देने से पूर्व संस्था द्वारा प्रत्येक दंपति का गृह सर्वेक्षण किया जाता है, तत्पश्चात् ही शिशु गोद दिया जाता है। ❐

वैष्णवी गई अपने पालकों के पास

गत दिनों मातृछाया मियाँवली नगर में बालिका वैष्णवी के दत्तक ग्रहण समारोह के उपलक्ष्य में प्रातः 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक का कार्यक्रम रहा। उपस्थिति लगभग 70 रही। मंच पर माननीय प्रांत संघचालक डॉक्टर अनिल अग्रवाल जी, प्रांत उपाध्यक्ष श्री संजय जिंदल जी, डॉक्टर दीपक सिंगला जी, डॉक्टर सरोज सिंगल जी, डॉक्टर नरीन सहगल जी, डॉक्टर मृदु जैन सहगल जी, सिख समाज से श्री टी एस साही तथा श्रीमती अमृता साही (प्रधान इनर व्हील रोटरी क्लब-रोहिणी) उपस्थित रहे। कार्यक्रम गायत्री मंत्र के उच्चारण से प्रारंभ हुआ। सबका परिचय तथा पटका पहना कर मान सम्मान किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का अद्भुत अनुभव रहा। बिटिया वैष्णवी को आशीष जी के परिवार में विधिपूर्वक जोड़ा गया। मंचासीन सभी ने आशीर्वचन/संबोधन किया। कल्याण मंत्र के साथ कार्यक्रम समापन हुआ। ❐

धैर्यवान अधीश जी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख रहे श्री अधीश जी 5 जुलाई, 2007 को हजारों कार्यकर्ताओं को छोड़कर इस दुनिया से चल बसे थे। उनका जन्म 17 अगस्त, 1955 को आगरा के एक अध्यापक श्री जगदीश भटनागर एवं श्रीमती उषा देवी के घर में हुआ था। 1968 में विद्या भारती द्वारा संचालित एक इण्टर कालिज के प्राचार्य श्री लज्जाराम तोमर ने उन्हें स्वयंसेवक बनाया। बी.एस-सी, एल.एल. बी करने के बाद 1973 में उन्होंने संघ कार्य हेतु घर छोड़ दिया।

अधीश जी ने सर्वोदय के सम्पर्क में आकर खादी पहनने का व्रत लिया और उसे आजीवन निभाया। 1975 में आपातकाल लगने पर वे जेल गये और भीषण अत्याचार सहे। आपातकाल के बाद उन्हें विद्यार्थी परिषद में और 1981 में संघ कार्य हेतु मेरठ भेजा गया। मेरठ महानगर, सहारनपुर जिला, विभाग, मेरठ प्रान्त बौद्धिक प्रमुख, प्रचार प्रमुख आदि दायित्वों के बाद उन्हें 1996 में लखनऊ भेजकर उत्तर प्रदेश के प्रचार प्रमुख का काम दिया गया। परिश्रमी, मिलनसार और वक्तृत्व कला के धनी अधीश जी से जो भी एक बार मिलता, वह उनका होकर रह जाता। इस बहुमुखी प्रतिभा को देखकर संघ नेतृत्व ने उन्हें अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख और फिर प्रचार प्रमुख का काम दिया। अब पूरे देश में उनका प्रवास होने लगा।

इसी बीच उन्हें कैंसर हो गया, यह जानकारी मिलते ही सब चिन्तित हो गये। अंग्रेजी, पंचगव्य और योग चिकित्सा जैसे उपायों का सहारा लिया गया; पर रोग बढ़ता ही गया। मार्च 2007 में दिल्ली में जब फिर जाँच हुई, तो चिकित्सकों ने अन्तिम घण्टी बजा दी। उन्होंने साफ कह दिया कि अब दो-तीन महीने से अधिक का जीवन शेष नहीं है। अधीश जी ने इसे हँसकर सुना और स्वीकार कर लिया। इसके बाद उन्होंने एक विरक्त योगी की भाँति अपने मन को शरीर से अलग कर लिया।

कोई पूछता कैसा दर्द है, तो कहते, बहुत मजे का है। इस प्रकार वे हँसते-हँसते हर दिन मृत्यु की ओर बढ़ते रहे। चार जुलाई, 2007 को वे बेहोश हो गए। कष्ट देखकर पाँच जुलाई की शाम को माता जी ने उनके सिर पर हाथ रखकर कहा - बेटा अधीश, निश्चिन्त होकर जाओ। जल्दी आना और बाकी बचा संघ का काम करना। 52 वर्ष की अल्पायु में ही अधीश जी ने देह त्याग दी। ❐

सन्तों की पाती, सेवाभावी महानुभावों के नाम

दुःखितानां हि भूतानां दुःखोद्धर्ता हि तो नरः।
स एव सृकृती ज्ञेयो नारायणांशजः॥

दुखी प्राणियों, दीनों-अनाथों, रोगार्तजनों की जो सेवा करता है तथा उनके दुख को जो दूर करता है, लोक में वह पुण्यात्मा है और उसे नारायण के अंश से उत्पन्न हुआ समझना चाहिए।

भगवान की विशेष अनुकंपा से हमें जो यह मानव शरीर प्राप्त हुआ है, जो स्थिति मिली है, जो साधन मिले हैं-वे सब इसलिए हैं कि हम प्राप्त वस्तु, स्थिति और समय का सदुपयोग कर अपने जीवन को सफल बना लें। सफल जीवन उस व्यक्ति का है, जो निष्काम भाव से दूसरों के लिए सेवा रूप में सर्वस्व का त्याग कर देता है। अपने लिए जीना-केवल स्वार्थ के लिए जीना तो निष्फल जीवन है। जिस मनुष्य की संपदा दूसरों की सेवा में लगती है, उसी का जीवन सफल है। बुद्धिमान को उचित है कि वह दूसरों के उपकार के लिए तन,मन, धन और जीवन तक को समर्पण कर दे, क्योंकि इन सब का नाश तो निश्चित ही है, इसलिए सत्कार्य में इनका विनियोग करना अच्छा है।

शास्त्रों में सेवा की अपार महिमा बताई गई है और सेवा धर्म को अंतःकरण की पवित्रता का श्रेष्ठ एवं सुगम साधन बताया गया है। सच्चा सेवाभावी जहां रहता है, वह भूमि तीर्थस्वरूप हो जाती है। सेवा दयामूलक भी होती है और श्रद्धामूलक भी। श्रद्धामूलक और दयामूलक सेवा के अधिकारी सभी हैं। इसमें पात्र-अपात्र का विचार नहीं है। अतः जैसे भी बने सेवा धर्म का अवश्य पालन करना चाहिए।

सेवा में विश्वबंधुत्व की भावना और दूसरों के सुखों का भाव मुख्य रूप से समाहित रहता है। जब तक व्यक्ति नर में अर्थात् जीवमात्र में नारायण अनुस्यूत नहीं देखेगा, वह सेवा कर ही नहीं सकता। सेवा बलिदान की भूमि है, उत्सर्ग की भूमि है, न्योछावर की भूमि है। इसमें आदान नहीं प्रदान है, स्वार्थ नहीं परमार्थ है। प्राणीमात्र की सच्ची सेवा स्वयं में पूर्ण साधना है। अतः अपने जीवन को साधनामय, प्रेममय और सेवामय बनाना चाहिए।

जीव मात्र की तनिक भी सच्ची सेवा बन जाए तो यह उस सेवा करने वाले व्यक्ति का परम सौभाग्य है। साथ ही सेव्य द्वारा सेवा स्वीकृत हो जाय तो अपने को धन्य-धन्य समझना चाहिए, भगवत्कृपा समझनी चाहिए।

संतापग्रस्त इस दुनिया में सेवा की तनिक-सी चेष्टा, सहानुभूति के दो मीठे बोल, दीनों, अनाथों, दुखियों की परिचर्चा, रोगियों की सेवा, सुश्रुषा और जीवमात्र के प्रति अहिंसा का भाव, दया का भाव, हृदय को शांत, शीतल और आहलादित कर देता है। अतः अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य के अनुसार सेवाभावी, दयावान, परोपकारी और उदार बनने का प्रयत्न करना चाहिए। वर्तमान संदर्भ में विश्व शांति की स्थापना में सेवा की भावना परम उपयोगी सिद्ध हो सकती है। ❐

इस वक्त

काम से देर रात बहन घर पर आए तो यह बुराई है, लेकिन बेटा बेवजह ही रात भर आवारागर्दी करे, यह कहां तक उचित है। रात के तकरीबन 8 बजे, वह बच्चों को ट्यूशन पढ़ा कर घर पहुंची। देखा, तो आज उसका बड़ा भाई घर में पहले से ही मौजूद था। आमतौर पर इस वक्त वो घर में कम ही नजर आता है। बहन के घर के अंदर कदम रखते ही वह बोल पड़ा- तुम इस वक्त घर लौट रही हो?

हां, ट्यूशन पढ़ा कर घर लौटने में इतना वक्त तो हो ही जाता है। बहन ने जवाब दिया। इस वक्त बाहर कितना अंधेरा हो जाता है, तुम्हें मालूम नहीं क्या? भाई ने तेज स्वर में कहा।

हां, मालूम है, मगर काम करना भी तो जरूरी है। बहन ने जवाब दिया। मगर इस समय घर लौटना सही नहीं है। शहर का माहौल कितना खराब हो रहा है, तुम जानती नहीं हो? और गली के मोड़ पर वे लफंगे लड़कों का झुंड तो जरूर खड़ा रहता है। अपनी बात पर जोर देने के लिए वह बोला। हां और उस झुड में मुझे अक्सर तुम भी नजर आ जाते हो। बहन ने अपने मन में ही कहा। मैं बस इतना कह राह हूं कि इतना वक्त होने से पहले घर लौटा करो। इससे पहले बहन उसे कुछ जवाब दे पाती, वह रसोई में खाना पकाती मां को आवाज देकर बोला, मां, मेरा खाने पर इंतजार मत करना। मुझे आने में देर होगी। यह कहते हुए वह घर से बाहर जाने लगा।

तुम कहां जा रहे हो? बहन ने सवाल किया। अपने दोस्तों के पास जा रहा हूं। उसने जवाब दिया। इस वक्त? बहन ने हैरानी से पूछा। हां रोजाना होता हूं। तुम्हें कोई परेशानी है क्या? उसने पूछा। नहीं, मगर इस वक्त तो बाहर काफी अंधेरा हो जाता है। बहन ने कहा। मैं जानता हूं। वह कड़े स्वर में बोला। शहर का माहौल कितना खराब है, तुम्हें तो बेहतर पता होगा और वहां वो गली के मोड़ पर, वो लफंगे लड़कों का झुंड भी खड़ा होगा। बहन ने उसे चेताया। वह चिड़चिड़ाते हुए बोला, यह सब तुम मुझे क्यों बता रही हो? मैं सब जानता हूं। बहन थोड़ा मुस्कुराते हुए बोली कुछ नहीं, बस सोच रही हूं। कितनी अजीब बात है। ना? क्या? उसने पूछा। यही कि मेरा इस समय, अपना काम खत्म कर घर लौटना सही नहीं और तुम्हारा इस वक्त अपने दोस्तों के साथ फिजूल बाहर घूमने जाना गलत नहीं।

अपनी छोटी बहन से ऐसे जवाब की शायद उसने उम्मीद नहीं की थी, इसलिए वह पहले तो कुछ पल के लिए उसे खड़ा देखता रहा, फिर बिना कोई जवाब दिए सिर झुकाए मुख्य द्वार से बाहर चला गया। ❐

राष्ट्र चेतना का आवाह्न

■ इन्दिरा मोहन

शंख बजा है बलिदानों का
निर्माणों का नव परचम
राष्ट्र चेतना का आवाह्न
एक लक्ष्य हो एक कदम।

ऊँचाई श्रम पर निर्भर है
प्रगति चक्र नित घूम रहा
समता की हम फसलें रोपें
जन-जन को खुशियां सौपें

मातृभूमि के इस मंदिर में
सजे एकता सुन्दरतम।

तारीखें युग की बदले हम
गौरव गरिमा हो अनुपम
भेदभाव का ताप हरे
अवसर की पहचान करें

सामूहिकता हम को प्यारी
उलझन मिल सुलझायें हम।

आँगन में है नव हल चल
उठें, राष्ट्र के युवा सबल
मान मिले अपमान नहीं
बिका हुआ अनुदान नहीं

कालजयी इतिहास हमारा
एक लक्ष्य हो एक कदम।। ❐

माँ, अभी तो मैं इंग्लैंड में ही हूँ

■ डॉ. सुभाष गोयल

''माँ, मुझे कुछ महीने के लिए विदेश जाना पड़ रहा है। तेरे रहने का इन्तजाम मैंने करा दिया है।'' तकरीबन 32 साल के अविवाहित डॉक्टर सुदीप ने देर रात घर में घुसते ही कहा। 'बेटा, तेरा विदेश जाना जरूरी है क्या!'

माँ की आवाज में चिन्ता और घबराहट झलक रही थी। 'माँ, मुझे इंग्लैंड जाकर कुछ रिसर्च करनी है। वैसे भी कुछ ही महीनों की तो बात है।' सुदीप ने कहा। 'जैसी तेरी इच्छा।' मरी से आवाज में माँ बोली। और छोड़ आया सुदीप अपनी माँ 'प्रभा देवी' को पड़ोस वाले शहर में स्थित एक वृद्धा-आश्रम में।

वृद्धा-आश्रम में आने पर शुरू-शुरू में हर बुजुर्ग के चेहरे पर जिन्दगी के प्रति हताशा और निराशा साफ झलकती थी। पर प्रभा देवी के चेहरे पर वृद्धा-आश्रम में आने के बावजूद कोई शिकन तक न थी। एक दिन आश्रम में बैठे कुछ बुजुर्ग आपस में बात कर रहे थे। उनमें दो-तीन महिलाएं भी थीं। उनमें से एक ने कहा, 'डॉक्टर का कोई सगा-सम्बन्धी नहीं था जो अपनी माँ को यहाँ छोड़ गया।'

तो वहाँ बैठी एक महिला बोली, 'प्रभा देवी के पति की मौत जवानी में ही हो गयी थी। तब सुदीप कुल चार साल का था। पति की मौत के बाद, प्रभा देवी और उसके बेटे को रहने और खाने के लाले पड़ गए। तब किसी भी रिश्तेदार ने उनकी मदद नहीं की। प्रभा देवी ने लोगों के कपड़े सिल-सिल कर अपने बेटे को पढ़ाया। बेटा भी पढ़ने में बहुत तेज था, तभी तो वो डॉक्टर बन सका।'

वृद्धा-आश्रम में करीब 6 महीने गुजर जाने के बाद एक दिन प्रभा देवी ने आश्रम के संचालक राम किशन शर्मा जी के ऑफिस के फोन से अपने बेटे के मोबाइल नम्बर पर फोन किया, और कहा, 'सुदीप तुम हिंदुस्तान आ गये हो या अभी इंग्लैंड में ही हो?'

'माँ, अभी तो मैं इंग्लैंड में ही हूँ।' सुदीप का जवाब था। तीन-तीन, चार-चार महीने के अंतराल पर प्रभा देवी सुदीप को फोन करती उसका एक ही जवाब होता, 'मैं अभी वहीं हूँ, जैसे ही अपने देश आऊँगा तुझे बता दूँगा।' इस तरह तकरीबन दो साल गुजर गए। अब तो वृद्धा-आश्रम के लोग भी कहने लगे कि देखो कैसा चालाक बेटा निकला, कितने धोखे से अपनी माँ को यहाँ छोड़ गया। आश्रम के ही किसी बुजुर्ग ने कहा, 'मुझे तो लगता नहीं कि डॉक्टर विदेश-पिदेश गया होगा, वो तो बुढ़िया से छुटकारा पाना चाह रहा था।' तभी किसी और बुजुर्ग ने कहा, 'मगर वो तो शादी-शुदा भी नहीं था।' अरे होगी उसकी कोई 'गर्ल-फ्रेण्ड', जिसने कहा होगा- पहले माँ के रहने का अलग इंतजाम करो, तभी मैं तुमसे शादी करुँगी।'

दो साल आश्रम में रहने के बाद अब प्रभा देवी को भी अपनी नियति का पता चल गया। बेटे का गम उसे अंदर ही अंदर खाने लगा। वो बुरी तरह टूट गयी। दो साल आश्रम में और रहने के बाद एक दिन प्रभा देवी की मौत हो गयी। उसकी मौत पर आश्रम के लोगों ने आश्रम के संचालक शर्मा जी से कहा, 'इसकी मौत की खबर इसके बेटे को तो दे दो। हमें तो लगता नहीं कि वो विदेश में होगा, वो होगा यहीं कहीं अपने देश में।' 'इसके बेटे को मैं कैसे खबर करूँ। उसे मरे तो तीन साल हो गए।' शर्मा जी की यह बात सुन वहाँ पर उपस्थित लोग सनाका खा गए। उनमें से एक बोला, 'अगर उसे मरे तीन साल हो गये तो प्रभा देवी से मोबाइल पर कौन बात करता था।' 'वो मोबाइल तो मेरे पास है, जिसमें उसके बेटे की रिकॉर्डेड आवाज है।' शर्मा जी बोले।

'पर ऐसा क्यों?' किसी ने पूछा। तब शर्मा जी बोले कि करीब चार साल पहले जब सुदीप अपनी माँ को यहाँ छोड़ने आया तो उसने मुझसे कहा, 'शर्मा जी मुझे 'ब्लड कैंसर' हो गया है। और डॉक्टर होने के नाते मैं यह अच्छी तरह जानता हूँ कि इसकी आखिरी स्टेज में मुझे बहुत तकलीफ होगी। मेरे मुँह से और मसूड़ों आदि से खून भी आएगा। मेरी यह तकलीफ माँ से देखी न जा सकेगी। वो तो जीते जी ही मर जाएगी। मुझे तो मरना ही है पर मैं नहीं चाहता कि मेरे कारण मेरे से पहले मेरी माँ मरे। मेरे मरने के बाद दो कमरे का हमारा छोटा सा 'फ्लैट' और जो भी घर का सामान आदि है वो मैं आश्रम को दान कर दूँगा।' यह दास्ताँ सुन वहाँ पर उपस्थित लोगों की आँखें झलझला आयीं।

प्रभा देवी का अन्तिम संस्कार आश्रम के ही एक हिस्से में कर दिया गया। उनके अन्तिम संस्कार में शर्मा जी ने आश्रम में रहने वाले बुजुर्गों के परिवार वालों को भी बुलाया। माँ-बेटे की अनमोल और अटूट प्यार की दास्ताँ का ही असर था कि कुछ बेटे अपने बूढ़े माँ/बाप को वापस अपने घर ले गए...! ❐

माता-पिता के साथ समय बिताओ

■ संजय रॉबिन

मेरी पोस्ट से आप इत्तेफाक रखते हों या नही, लेकिन फिर भी मैं अपने जीवन के अनुभवों से उन सच्चाइयों को परोसता रहूंगा जिसकी टीस ज्यादातर लोगों के दिल मे है लेकिन वो बोल नही पाते। इस लेख के माध्यम से ना जाने कितने दिलों की व्यथा आज आपके सामने रख रहा हूँ। अपनी खुशियों को ताख पे रख के सिर्फ बच्चों का उज्ज्वल भविष्य बनाने वाले ना जाने कितने बूढ़े माँ बाप की कहानी है ये। इसे पढ़ने वाले जवान हो या अधेड़, आज भागम भाग की ज़िंदगी मे अपने ही आने वाले कल को अपने हाथों से नष्ट करने की कगार पर खड़े हैं। इन्होंने अभी जीवन का वो पहलू देखा ही कहाँ है जिसमे इनके पास सब कुछ होकर भी इनके हाथ खाली हैं। ये लेख उनसे रिलेट नही करता जो इस कड़ी से बाहर हैं लेकिन उन सबसे जरूर रिलेट करता है जिनकी आंखों में सिर्फ अपना स्वार्थ भरा है। यह लेख किसी के दिल को दुखाने के लिये नही लिख रहा फिर भी अगर अनचाहे में किसी से रिलेट कर जाए तो अग्रिम माफी चाहूंगा।

माना आप जवान हो या अधेड़ावस्था की कगार पर खड़े हो, आपकी बाजुओं में अभी बल है, आप जिम जाते हो, सुबह सैर पर जाते हो या बहुत पैदल चलते हो, फिर भी भागदौड़ भरी जिंदगी में आप अपने आप को फिट रखने की कोशिश तो कर ही रहे हो। आपके पास इतना काम है कि आपको समय का अभाव है, आप सुबह घर से निकलते भी बिना नाश्ते के हो क्योंकि आपको समय का अभाव है, एक हाथ मे गाड़ी का स्टेयरिंग हो सकता है, दूसरे में रोटी या परांठे का रोल, कांधे पर सर को झुकाए स्पीकर फोन पर जरूरी बातें करते होंगे या आज पैसा कितना आएगा, कहाँ से आएगा, इसमे दिमाग दौड़ाते होंगे, लेकिन पीछे आप क्या छोड़े जा रहे हो, इसका अहसास तब होगा जब आप भी एक उम्र में पहुंच जाओगे।

माँ पिताजी की सेवा के लिए नौकर चाकर रखे होंगे, लेकिन उनका हाथ पकड़ कर हाल फिलहाल में कभी घूमने गए हो? ना, कैसे जाओगे, आपके हाथों में तो फौरन ब्रीड के कुत्ते की चेन होती है, आप तो उसे घुमा रहे हो क्योंकि कुत्ते की सेहत के लिए उसका घूमना जरूरी

है। कभी सोचा है आजकल माँ पिताजी की सेहत भी ठीक नही रहती? एक हाथ का सहारा उनको भी चाहिए, क्या पता तुम्हारे साथ सुबह सुबह घूम लेने से उनकी सेहत में भी सुधार आ जाये। तुम्हारे बाजुओं का बल उन कमजोर बाजुओं को चाहिए जो तुम्हें बलशाली बनाते बनाते शिथिल पड़ गई हैं। लेकिन ना, तुम्हारे हाथों में माँ पिताजी का हाथ कहाँ शोभा देता है, तुमको तो एक चेन पकड़ने की आदत जो हो गई है।

कितने अकेले रहते होंगे, सोचो ज़रा एक बार, जब घर मे कोई ना दिखता होगा। जब तुम छोटे थे, तब तुम भी अकेलेपन से डरते थे, माँ पिताजी ने कभी तुम्हे अकेला छोड़ा ही नही क्योंकि तुम डरते थे। डरते वो भी थे लेकिन तुम्हारे नुकसान से, कहीं तुम गिर ना जाओ, कहीं तुम्हे चोट ना लग जाये, कहीं तुम कुछ गलत ना खा लो या तुम कहीं गुम ना हो जाओ। बच्चे का गुम होना ही सबसे बड़ा डर होता है, हर माँ बाप के लिए, तभी तो तुम्हे उन्होंने हमेशा अपनी नज़रों के सामने रखा है, कभी आंखों से ओझल ना होना दिया। लेकिन जिनको सच मे एक दिन गुम हो जाना है उनकी तुम्हे फिक्र कहाँ, तुम्हारे अपने काम इतने हैं कि शायद तुम्हे उनके गुम होने से कोई फर्क ना पड़े। जरा आज घर मे रात को थोड़ी देर से आना फिर देखना तुम्हारा आज भी कितना इंतजार रहता है उनको। अभी वक्त है, अगर माँ बाप का साया सर पर है तो आज से ही उनकी कद्र शुरू कर दो, कहीं ऐसा ना हो कि पश्चाताप का भी समय ना मिले क्योंकि तुम्हारे पास समय का अभाव जो है।

अपनी बिज़ी ज़िन्दगी से चार छह दिन निकालो, कुछ ना करो, सिर्फ माँ पिताजी के साथ समय बिताओ, उनसे बात करो, अपने बचपन की शरारतों को जिंदा करो, पिछली कहानियाँ दोहराओ। अपने हाथ से बना कर उन्हें कुछ खिलाओ। बाहर लेकर जाओ, उन्हें खूब घुमाओ फिराओ, आप उनकी उंगली पकड़ कर चलने वाले वही बच्चे हो जो आज उनका हाथ थाम कर चल सकते हो, इस बात का अहसास कराओ। ये थोड़ी सी खुशी उनके जीवन मे कितनी खुशियाँ ला देंगी तुम समझ भी नही सकते। तुम बेटी हो या बेटा लेकिन उनके तो तुम बच्चे ही हो, जो दुलार तुम्हे मिला था, वही आज उनको वापस दे दो। उन्हें तुम्हारा पैसा नही चाहिए, सिर्फ तुम्हारा समय चाहिए! अपने बिजी शेड्यूल से कुछ समय निकालो, सिर्फ उनके लिये!! वक्त है, ना जाने कब हाथों से निकल जाए, आज तुम्हारे पास मौका है, शायद कल ना हो। ❐

घुमंतू बाल बालिका विकास शिविर

■ प्रतिनिधि

घुमंतू समाज अर्थात वह समाज जो देश की संस्कृति को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाने तथा भारतवर्ष के गौरव को बनाए रखने के लिए अपनी प्रतिज्ञाओं के चलते घुमंतू बनना स्वीकार किया तथा निरंतर एक स्थान से दूसरे स्थान पर विचरण करता रहा। साथ ही समय के बदलते स्वरूप में आज कई घुमंतू समाज स्थिर जीवन यापन भी कर रहे हैं। घुमंतू पद्धति होने के कारण यह समाज समय के साथ नहीं चल पाया जिसके कारण यह शिक्षा तथा अन्य सुख सुविधाओं से वंचित रहा। सेवा भारती पिछले कुछ वर्षों से इस समाज के मध्य कार्य कर रही है तथा उनकी संस्कृति तथा उनके गौरवशाली इतिहास को बचाए रखने के लिए कुछ ना कुछ कार्य अथवा कार्यक्रम करती रहती है, जैसे–

1. घुमंतू समाज की एक बिटिया का बसंत पंचमी के दिन होने वाले सामूहिक विवाह समारोह में विवाह करवाया जो कि घुमंतू समाज संयोजक के सहयोग से, अथक प्रयासों के बाद संपन्न हुआ।
2. पिछले दो वर्षों से मनाई जा रही महाराणा प्रताप जयंती, जो कि इस साल गाड़िया लोहारों की 19 बस्तियों में कार्यक्रम, एक शोभा यात्रा तथा एक महाराणा प्रताप कोचिंग एवं सिलाई केंद्र के उद्घाटन के माध्यम से मनाई गई।
3. गाड़िया लोहार समाज के 15 बच्चों का प्रवेश विद्या भारती विद्यालयों में करवाया गया।
4. अपराजिता छात्रावास भी घुमंतू समाज में कार्य का ही एक परिणाम है।
5. सपेरा समाज की 2 बच्चियों का प्रवेश माता जीवनी बाई छात्रावास में करवाया गया तथा पेरना और सपेरा समाज के बालकों का प्रवेश सेवा धाम में करवाया गया।
6. 15 बच्चों का प्राथमिक वर्ग शिक्षण करवाया गया।
7. पश्चिमी तथा केशवपुरम विभाग में दस्तावेज बनाने का कार्य किया गया।
8. सिलाई, कंप्यूटर, कोचिंग, साप्ताहिक चिकित्सा, बालबाड़ी, बाल संस्कार तथा किशोरी विकास के गाड़िया लोहार समाज में 19, सांसी समाज में 4 तथा सपेरा समाज में 1 प्रकल्प चलाया गया।

इसी प्रकार की एक कोशिश है – घुमंतू बाल बालिका विकास शिविर। घुमंतू समाज में शिक्षा के साथ – साथ सर्वांगीण विकास के महत्व को समझने की एक कोशिश है, पूरे भारत में इस प्रकार का यह पहला शिविर है। यह 26 जुलाई शाम 4 बजे से 28 जुलाई दोपहर 2 बजे तक का था। इस 48 घंटे के आवासीय शिविर में गाड़िया लोहार,

सपेरा, ग्यारह तथा सिकलीगर समाज के 40 बच्चे, 26 अभिभावक तथा उनके 4 छोटे बालक रहे। शिविर का उद्देश्य था घुमंतू समाज के लोगों में शिक्षा के महत्व को समझाना तथा अभिभावकों का मानस तैयार करना कि किस प्रकार बच्चे का वातावरण बदल जाने से जीवन में कितना परिवर्तन आ जाता है। इस शिविर में उत्तरी क्षेत्र के परिवार प्रबोधन प्रमुख माननीय भगवान दास जी, दिल्ली प्रांत प्रचारक श्री विशाल जी, दिल्ली प्रांत के घुमंतू समाज संयोजक श्री राजबीर जी, सेवा भारती दिल्ली प्रांत के अध्यक्ष माननीय श्री रमेश अग्रवाल जी, उपाध्यक्ष श्री संजय गर्ग जी, संगठन मंत्री श्री शुकदेव जी तथा महामंत्री श्री सुशील जी का सानिध्य प्राप्त हुआ। शिविर में व्यवस्था प्रमुख के नाते दिनेश जी तथा उनके सहयोगी के नाते इंद्रनील जी, स्नेहकान्त जी तथा मानवेंद्र जी; पर्यवेक्षक के नाते रितेश जी; भोजन की व्यवस्था के नाते ओमबिर जी तथा महेंद्र सोलंकी जी; स्वच्छता के नाते प्रभाकर जी तथा माधव जी; जल व्यवस्था के नाते हरीकरण जी; यातायात के नाते विवेक जी; बाहरी व्यवस्था के नाते गवेन्द्र जी; बौद्धिक टोली प्रमुख के नाते गीता जी तथा उनके सहियोगी के नाते सुनीता मौर्य जी, अरुणा जी तथा सिमरन जी; कार्यालय व्यवस्था के नाते अनिल निगम जी; अधिकारी व्यवस्था के नाते अंकुर जी तथा चिंटू जी; तथा अन्य सभी व्यवस्थाओं के नाते राजीव बत्रा जी, तथा बृजलाल मग्गो जी का पूर्ण समय रहना हुआ। शिविर में विशेष सहयोग विमल जी (प्रधानाचार्य, सेवा धाम) तथा विद्यालय के छात्रों का रहा जिन्होंने सभी व्यवस्थाएं करवाई तथा शिविर में आए लोगों को सेवा धाम दर्शन भी करवाया।

इस द्विदिवसीय आवासीय शिविर में बच्चों तथा उनके अभिभावकों ने जाना कि कैसे उनके बच्चे भी अन्यों की भांति ही अच्छी शिक्षा ग्रहण कर आगे बढ़ कर अच्छा काम कर सकते हैं।

शिविर के अंत तक सभी अभिभावक माताओं को यह समझ आया कि बच्चे का भविष्य बनाना है तो उस वातावरण से निकालना पड़ेगा जहां वे अभी रह रहे हैं। इसके नाते उन्होंने अपने बच्चों को गोपाल धाम तथा सेवा धाम में प्रवेश के लिए भी बात की, जो कि इस शिविर की सफलता को दर्शाता है। ❐

वैभव श्री (स्वयं सहायता समूह) कार्यशाला

सेवा भारती यमुना विहार विभाग में माताएं बहिनें अधिक से अधिक संख्या में स्वयं सहायता समूह के निर्माण के माध्यम से स्वावलंबी बन सकें और विभाग में स्वयं सहायता समूहों की एक श्रृंखला का निर्माण हो सके इस हेतु 28 जुलाई रविवार को यमुना विहार विभाग में स्वयं सहायता समूह निर्माण और संचालन इत्यादि से संबंधित जानकारी प्रदान करने हेतु 2 स्थानों पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के माध्यम से स्वयं सहायता समूह के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। इस कार्यशाला में श्रीमान गोकुल सैनी जी के माध्यम से विषय का प्रतिपादन किया गया।

श्रीमान गोकुल सैनी जी कोठपुतली (अलवर, राजस्थान) के पास गांव के रहने वाले हैं। गोकुल सैनी जी को 400 से अधिक स्वयं सहायता समूहों के निर्माण और संचालन का अनुभव है। और 5200 से अधिक माताएं बहनें श्रीमान गोकुल सैनी जी के विभिन्न स्वयं सहायता समूहों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई हैं।

इन दोनों कार्यशालाओं में श्रीमान हरिओम जी (वैभव श्री आयाम प्रमुख दिल्ली प्रांत) का भी रहना हुआ।

एक कार्यशाला माधव सेवा केंद्र सुदामापुरी रोहतास नगर में आयोजित की गई। जिसमें 47 माताएं बहनें और 8 भाई उपस्थित रहे। श्रीमती प्रभा जी द्वारा संचालित स्वयं सहायता समूह (सुधारा) के उत्पादों को भी प्रदर्शनी प्रदर्शित की गई थी।

दूसरी कार्यशाला माता जीवनी बाई सेवा केंद्र जयप्रकाश नगर ब्रह्मपुरी में आयोजित की गई। जिसमें 150 माताएं बहिनें और 20 भाई उपस्थित रहे।

इस कार्यशाला में श्रीमान निर्भय शंकर जी (प्रांत मंत्री) का भी रहना हुआ। ❐

केन्द्र का शुभारम्भ

केशव पुरम विभाग में जनक जिला के नंगल नगर में कार्य विस्तार की दृष्टि से 31.7.24 सिलाई सेन्टर का शुभारंभ किया। इस उपलक्ष्य में वहां पर हवन कराया गया इसमें बस्ती के लोग शामिल हुए। जिले से कार्यकर्ता, संघ कार्यकर्ता एवं सेवा बस्ती का भरपूर सहयोग मिला। इसी क्रम में मोती नगर जिले में एक नया केन्द्र विधिवत श्री हनुमान चलीसा पाठ के साथ शुभारंभ किया गया। वक्ता द्वारा उपस्थित जन को अपनी सनातन संस्कृति के विषय में बताया गया। ❐

चेतावनी और सलाह

■ **विनोद श्रीवास्तव,** दक्षिणी विभाग मंत्री

एक 36 वर्षीय पुरुष को केन्सर हुआ था जो लास्ट स्टेज पर था। अपनी अब तक की उम्र में इन्होंने कभी भी गुटका, सिगरेट और पान व शराब का सेवन नहीं किया था। समय पर काम पर जाना, परिवार के साथ खुश रहना, उसका जीवन था, ना कोई बीमारी थी ना ही कोई चिन्ता।

सिर्फ 2-3 दिन से पेट में दर्द शुरू होने के कारण डॉ. से सम्पर्क कर इलाज शुरू किया, परन्तु कोई फायदा ना होने के कारण बड़े डॉ. से मिले। वहां के डॉ. ने उनकी सभी रिपोर्ट निकलवाई तो पता चला कि पेट के आंतड़ियों में केन्सर हुआ है।

डॉ. द्वारा इलाज की शुरूआत हुई, इलाज के दौरान पूरी जमा पूंजी के साथ घर-बार भी बिक गया, परन्तु परिणाम स्वरूप उनकी मौत हो गई। डॉ. ने परिवार से इनका अग्नि संस्कार ना करके, मानव सेवार्थ बोडी पर रिर्सच करने हेतु हॉस्पीटल में डोनेट करने की सलाह दी। परिवार में आपसी मंथन के बाद बॉडी को हॉस्पीटल में रिर्सच करने हेतु, डोनेट करने का निर्णय लेते हुए बॉडी को हॉस्पीटल में डोनेट की।

रिर्सच के बाद पता चला कि प्लास्टिक में गरम खाना व प्लास्टिक की बॉटल में पानी पीने से, उसमें से निकलने वाले केमिकल के कारण इन्हें केन्सर हुआ था। तब डॉ. द्वारा परिवार व साथियों से सम्पर्क कर उनके खान-पान के बारे में जांच की, तो इस जांच से पता चला कि उन्हें चाय पीने की आदत थी। वे दिन में पाँच से छः कप चाय पीते थे। यह भी पता चला कि जहाँ से चाय पीते थे वहाँ प्लास्टिक की थैली में चाय आती थी और प्लास्टिक के कप में चाय दी जाती थी।'

अक्सर देखा गया है लोग प्लास्टिक की थैलियों में दुकान से गरम चाय गरम सब्जी या अन्य समान मंगवाते हैं और वो ही खा लेते हैं या पी लेते हैं। वो ही धीरे धीरे आपके शरीर में कैन्सर बनाता है।

तब डॉ. द्वारा उनके साथ काम करने वाले साथियों का भी मेडिकल टेस्ट कराया तो पता चला कि उसके कई साथियों को कैन्सर का असर है। तब डॉ. ने उन्हें कैन्सर के इलाज की सलाह दी।

हम सोचते हैं कि सरकार इतनी खराब वस्तु जो कि स्वास्थ्य के साथ-साथ, पर्यावरण के लिए भी खतरनाक ही नहीं घातक है, उसके निर्माण करने की इजाजत कैसे दे देती है।

सरकार प्लास्टिक का उपयोग ना करने के प्रचार पर भी करोडों रू खर्च कर हमें समझाती है, परन्तु हम भी कहाँ समझते हैं। हम स्वंय भी तो अपना व अपने चाहने वालों को मौत की ओर ढकेलने का कार्य निर्भीक होकर कर रहे हैं, ना अपनी और ना ही परिवार की हमें चिन्ता है, बस मौत के गले लगाने के लिए फैशन की अंधी दौड में भाग रहे हैं।

अतः आप सभी से पुनः नम्र निवेदन है कि प्लास्टिक का उपयोग कम से कम करें, जहाँ तक हो सके प्लास्टिक के बर्तन में गरम खाना ना खायें, प्लास्टिक की बॉटल में पानी का उपयोग ना करें। विशेषकर गर्म चाय-कॉफी प्लास्टिक कप में ना पियें। ❐

स्वयं का बल

प्रभु कृपा के बल के साथ ही जीवन के किसी भी क्षेत्र में विजय के लिए स्वयं पर विश्वास होना आवश्यक है। जीवन में सफल होने का एक सीधा सा मंत्र है और वो ये कि आपकी उम्मीद स्वयं से होनी चाहिए किसी और से नहीं। स्वयं के पैरों पर उम्मीद ही हमें किसी दौड़ में विजेता बनाती है।

सूर्य स्वयं के प्रकाश से चमकता है और चन्द्रमा को चमकने के लिए सूर्य के प्रकाश पर निर्भर रहना होता है। दूसरे के प्रकाश से प्रकाशित होने की उम्मीद रखने के कारण ही चन्द्रमा की चमक एक जैसी नहीं रहती। कभी ज्यादा कभी कम तो कभी पूरी तरह क्षीण भी हो जाती है। कमल उतनी ही देर अपना सौंदर्य बिखेरता है जितनी देर उसे सूर्य का प्रकाश प्राप्त होता है। जीवन में सफल एवं सदा खुश रहना है तो दूसरों से किसी भी प्रकार की उम्मीद छोड़कर प्रभु कृपा के बल का भरोसा बनाए रखकर स्वयं ही उद्यम में लगना होगा ताकि संपूर्ण जीवन प्रसन्नता से जिया जा सके। ❐

पत्रकारों के लिए निशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर

विभिन्न मीडिया संस्थानों में कार्यरत पत्रकार भाई ध बहनों के उत्तम स्वास्थ्य के लिए सेवा भारती एवं नेशनल मेडिकल आर्गेनाईजेशन (छडo) के तत्वावधान में अशोक विहार स्थित सेवा भारती के डायग्नोस्टिक एंड डायलिसिस सेंटर में रविवार 21 जुलाई 2024 को निशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया। परामर्श के लिए एलोपैथी एवं होमोपैथी के डॉक्टर उपलब्ध थे। नेशनल मेडिकल आर्गेनाईजेशन (छडo) के डॉक्टरों ने परामर्श दिया तथा सेवा भारती के डायग्नोस्टिक सेंटर में निशुल्क जाँच की गई। स्वास्थ्य जाँच शिविर में पहुंचे पत्रकारों के लिए जलपान की भी व्यवस्था थी।

नेशनल एक्रिडिटेशन बोर्ड फॉर हॉस्पिटल्स (छ।ठभ) से मान्यता प्राप्त सेवा भारती के इस डायग्नोस्टिक एंड डायलिसिस सेंटर में खून जाँच के साथ ही ईसीजी, एक्स ख्र रे, अल्ट्रासाउंड, सीटी स्कैन, एमआरआई इत्यादि की सुविधाएँ उपलब्ध है। विभिन्न मीडिया संस्थानों में कार्यरत 50 से ज्यादा पत्रकारों ने इस सुविधा का लाभ लिया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख श्री नरेन्द्र ठाकुर जी ने कहा कि संघ के स्वयंसेवक समाज जीवन के सभी क्षेत्रों में कार्य करते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचार विभाग के प्रयास से सेवा भारती एवं छडo द्व ारा आयोजित किया गया यह स्वास्थ्य शिविर बहुत ही अच्छा प्रयास है। जब स्वयं का शरीर स्वस्थ रहता है तभी अपना कार्य भी हो पाता है और दूसरों का सहयोग भी। आप स्वस्थ एवं अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें यही इस स्वास्थ्य शिविर का उद्देश्य है।

सेवा भारती दिल्ली के संगठन मंत्री शुकदेव जी ने सेवा भारती द्वारा दिल्ली में चलाए जा रहे सेवा कार्यो की जानकारी दी। कंप्यूटर सेंटर, सिलाई सेंटर, फैशन डिजाईन सेंटर, ब्यूटी पार्लर सेंटर, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्किल, सामाजिक कार्य जैसे क्षेत्रों में सेवा भारती द्वारा सेवा कार्य किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि इस डायग्नोस्टिक सेंटर से किसी को निराश करके नहीं भेजते हैं। जो आया उसका टेस्ट जरुर करते हैं। टेस्ट का न्यूनतम शुल्क है लेकिन अगर को व्यक्ति वह शुल्क भी देने में अक्षम है तो हम उसका निशुल्क टेस्ट करते हैं। इस सेंटर पर न्यूनतम शुल्क पर डायलिसिस की भी सुविधा उपलब्ध है।

इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दिल्ली प्रान्त प्रचार प्रमुख श्री रीतेश अग्रवाल, छडo के दिल्ली प्रान्त प्रचार प्रमुख डॉ शैलेश कुमार एवं सेवा भारती दिल्ली के प्रचार प्रमुख श्री भूपेंद्र कुमार की भी उपस्थिति रही। ❐

पूर्वी विभाग के कार्यक्रम

दिनांक 12.07.2024 पूर्वी विभाग, इन्द्रप्रस्थ जिले में श्रीराम सेवा केन्द्र पर अपोलो अस्पताल से सारिका जी आई थी जिन्होंने ब्रस्ट कैंसर के बारे में बताया। लक्षण, इलाज व मेमोग्राफली के विषय में बताया।

पूर्वी विभाग में 16 ब्लॉक कल्याणपुरी में लेडी हार्डिंग कॉलेज के सौजन्य से मेडिकल कैम्प लगया गया। कुल लाभार्थी -172, महिला -80, बच्चे -32, पुरूष- 60, विभाग की ओर कमल देवी, शारदा प्रसाद जी, जिले से भी कार्यकर्ताओं और शिक्षिका, निरीक्षिका उपस्थित रहे।

विभाग में कई अन्य बैठकों में इन्द्रप्रस्थ में श्रीमती राजश्री आहुजा जी, विभाग मंत्री एवं मयूर विहार जिले में जिला प्रचारक चिन्मयानंद जी, जिला कार्यवाह बालाजी ने शिक्षिका निरीक्षिका एवं बस्ती जन साथ उपस्थित होकर अन्य विषयों के साथ ही संघ शताब्दी वर्ष पर विस्तार से चर्चा किये। ❐

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर चिकित्सा शिविर

यमुना विहार विभाग में दिनांक 21 जुलाई, 2024 गुरु पूर्णिमा के दिन जिला रोहतास नगर की रविदास सेवा बस्ती वेलकम में एनएमओ द्वारा मेडिकल कैंप लगाया गया। इसमें कुल संख्या 59 रही। यह मेडिकल कैंप प्रत्येक मास के तीसरे रविसार को रहेगा, ऐसा भी तय हुआ है। इसमें डॉ. हिमालय गर्ग व डॉ. अरुण जी एवं 4 सहयोगी डाक्टरों की टीम द्वारा जांच की गई। जिला सेवा प्रमुख सुरेन्द्र जी व सेवा भारती के कार्यकर्ताओं ने सहयोग दिया। ❐

पाठ्यपुस्तकों का वितरण

दिल्ली की अलग-अलग सेवा बस्तियों में सेवा भारती के प्रकल्पों में शिक्षा ग्रहण करने वाले उपेक्षित एवं सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े बच्चों को आधुनिक शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से गत दिनों पाठ्यपुस्तकों का वितरण किया गया। और इसी कड़ी में सेवा भारती स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रकल्प, कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन केंद्र द्वारा संचालित विभिन्न केन्द्रों के बच्चों को अंग्रेजी, कम्प्यूटर, व्याकरण, सुलेख (हिन्दी/इंग्लिश), गणित, सामान्य ज्ञान आदि पुस्तकों का वितरण किया गया। ये सभी पुस्तकें सेवा भारती, दिल्ली द्वारा विभिन्न केन्द्रों पर उपलब्ध कराई गयी हैं। ❐

शुभ जन्म दिवस

गत 1 जुलाई को केशव पुरम विभाग के मंत्री श्री रामसेवक जी ने अपने पोते का जन्मदिन मनाया। इस कार्यक्रम में सेवा भारती प्रांत और विभाग कार्यकर्ताओं के साथ गोपालधाम छात्रावास, राम मन्दिर रघुवीर नगर के बच्चों ने भाग लिया। उपस्थित जन ने बालक को आशीर्वाद दिया। कार्यक्रम के बाद भोजन प्रसाद की व्यवस्था थी।

दर्शनीय स्थलों का भ्रमण

सेवा भारती, दिल्ली,केशव पुरम विभाग द्वारा संचालित केन्द्र में पढ़ने वाले बच्चों को ग्रीष्मावकाश में स्कूल शुरू होने से पूर्व दिल्ली में कई दर्शनीय स्थलों का भ्रमण करवाया गया। जैसे कि रेल संग्रहालय, नेहरू तारामंडल, पीएम संग्रहालय आदि-आदि एवं इन स्थानों के इतिहास के बारे में भी बताया गया।

प्रशिक्षण वर्ग

गत 6 जुलाई को केशव पुरम विभाग के मोती नगर जिले में राखी मार्किट केन्द्र पर शिक्षिका प्रशिक्षण वर्ग आयोजित किया गया। प्रात 11.00 बजे से 4.00 बजे, जिसमें विभाग कोषाध्यक्ष उपाध्यक्ष, जिला मंत्री, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, महिला मंत्री, कार्यकर्ता एवं शिक्षिका/निरीक्षिका उपस्थित रही। चार सत्र हुए। दीप प्रज्जवलन, गायत्री मंत्र, प्रार्थना, गीत के बाद विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई। शिक्षिकाओं से प्रश्नोत्तरी के साथ-साथ आवश्यक जानकारी दी गयी। तृतीय सत्र में समाान्य ज्ञान सं सम्बन्धित प्रश्न हल करवाए गये एवं अपनी संस्कृति पर परिचर्चा हुई। प्रोत्साहन स्वरूप पुरस्कार भी दिये गये।

चौखण्डी गाँव में चिकित्सा शिविर

तिलक जिला में चौखण्डी गाँव में चिकित्सा शिविर लगाया गया। काफी संख्या में स्थानीय जरूरतमंद लोगों ने इसका लाभ उठाया।

कॉलेज के छात्रों ने देखा सेवा प्रकल्प

गत 14 जुलाई को रघुवीर नगर केन्द्र पर भारती कालेज, राजधानी कालेज और शिवाजी कालेज के छात्र-छात्राओं का आना हुआ। उन्होंने केन्द्र में कार्यकत सभी प्रकल्पों का अवलोकन किया। छात्रावास में रह रहे बच्चों के साथ बातचीत की। कुल संख्या 20 थी।

गुरु पूजन और हवन

सेवा भारती स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रकल्प, कलंदर कॉलोनी दिलशाद गार्डन में दिनांक 20 जुलाई 2024, दिन शनिवार को गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर हवन एवं महर्षि वेदव्यास जी के पूजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर प्रातः 11 बजे से हवन का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ, जिसमें केंद्र में प्रथम पाली में शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों, शिक्षकों एवं कार्यकारिणी के सदस्यों ने भाग लिया। हवन के उपरांत पुष्पार्चन द्वारा महर्षि वेदव्यास जी का पूजन संपन्न हुआ। प्रातः हवन कार्यक्रम में कुल 55 लोगों ने भाग लिया।

द्वितीय पाली में महर्षि वेदव्यास पूजन का कार्यक्रम दोपहर 2 बजे से प्रारंभ हुआ। इसमें केंद्र में अध्ययन करने वाली छात्राओं, शिक्षिकाओं एवं कार्यकारिणी के सदस्यों ने भाग लिया। दोपहर के कार्यक्रम में कुल 80 लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम के उपरांत सभी को बताशे का प्रसाद दिया गया। ❐

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

विज्ञापन के लिए आग्रह

'सेवा समर्पण' पत्रिका समाज एवं संस्कृति के प्रति समर्पित, प्रतिष्ठित वर्ग, कार्यकर्ता एवं युवा वर्ग के बीच पिछले 41 वर्ष से 'नर सेवा-नारायण सेवा' के मूल मंत्र को लोकप्रिय बना रही है। इस पत्रिका द्वारा परिवार प्रबोधन, भारतीय जीवन शैली और संस्कारों से युक्त समसामयिक विषयों के साथ-साथ बच्चों, युवा वर्ग एवं महिलाओं संबंधी विषय सामग्री के द्वारा स्वावलम्बन, शिक्षा और संस्कारों को जन-जन तक पहुंचाने का विशेष कार्य हो रहा है। समय- समय पर किसी एक बिन्दु को केन्द्रित कर विशेषांक निकालने की योजना रहती है। आपसे प्रार्थना है कि अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन प्रकाशित कराएं और 50,000 पाठकों तक अपनी पहुंच बनाएं। यह पत्रिका सरकारी कार्यालयों, मंत्रालयों, पुस्तकालय, व्यापारी वर्ग, कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र, अन्य गैर-सरकारी संगठनों, अस्पताल इत्यादि स्थानों पर जाती है।

संपर्क करें-

सेवा भारती, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट,
नई दिल्ली-110001
फोन - 011-23345014-15

समस्याओं के समाधान का केन्द्र

अप्रैल 2010 में रघुवीर नगर के श्री राम मन्दिर में प्रसन्ना सलाह केन्द्र की शुरुआत की गई। सलाह केन्द्र के प्रारंभ करने का उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों तथा परिवारों की सहायता करना है जो मानसिक, पारिवारिक तथा व्यक्तिगत समस्याओं से ग्रस्त हैं। कार्यकर्ता बहनें उनकी समस्याओं को सुनकर, उनका समाधान करने की कोशिश करती हैं। वार्तालाप करके उन्हें उचित मार्गदर्शन देती हैं। आज यह केन्द्र अनेक लोगों के लिए समस्या निवारण एवं भविष्य में सुखी जीवन के लिए वरदान से कम नहीं है। उचित परामर्श एवं समस्या समाधान के लिए निम्न स्थान पर वर्णित समयानुसार सम्पर्क कर सलाह पायें समाधान मिटायें-

स्थान

राम मन्दिर, रघुवीर नगर, (वीरवार- प्रातः 11 00 से 1.00 बजे)
बी-2/2, मियाँवाली नगर, नई दिल्ली-110087 (शुक्रवार- प्रातः 11.00 से 1.00)

सम्पर्क सूत्र- श्रीमती पायल बंसल (मो. 9650746668)

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 6-7 अगस्त, 2024, प्रकाशन तिथि-5 अगस्त, 2024
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नं. U(C)-166/2022-24
DL(ND)-11/6188/2022-23-24
अग्रिम शुल्क के बिना प्रेषण

"AGARWAL PACKERS AND MOVERS LTD."

(नर सेवा - राष्ट्र सेवा)

APML

Nindra Daan Kendra for Truck Chaalak

(A Unique Concept to reduce Accidents on Roads by Trucks)

(ट्रक ड्राईवर देश का आंतरिक सिपाही है)

- 4,12,432 accidents happened yearly in India.
- Out of these accidents 1,53,972 lost their lives.
- Our Kendra saving 21 lives monthly on road to avoid sleep deprivation and stress.
- Empowering Drivers with respectful environment to provide them sound sleep with safe and secure parking space along with free barber, washroom facilities and all are free.

Pran Vayu Vahan

(कोविड के समय चल चिकित्सा)

- Modified trucks into "Oxygen Providers Van" during highest peak of COVID -II.
- Container converted into clinic within 24hrs.
- It is equipped with all facilities i.e. Oxygen cylinder, Beds, Oxygen Concentrator etc.
- Saved 543 Lives to provide Oxygen to highly vulnerable patients in association with Sewa Bharti.

Community Empowerment

(सामाजिक समरसता और अंत्योदय का जीवंत उदाहरण)

- Reducing inequalities to provide access to socially backward people to build temple of Sant Shiromani Kabir Ji Maharaj in Nalwa (Hisar) for their Spiritual well beings.
- Providing livelihood and skills to differently abled and financially backwards.
- Girl empowerment.
- Education to highly vulnerable children from villages and tribes.
- Adopted approach to reduce Carbon Emission to conserve environment.

09 300 300 300 www.agarwalpackers.com

मुद्रक/संपादक/प्रकाशक: डॉ.. शिवाली अग्रवाल द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।